चकमक

जुलाई, 93

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

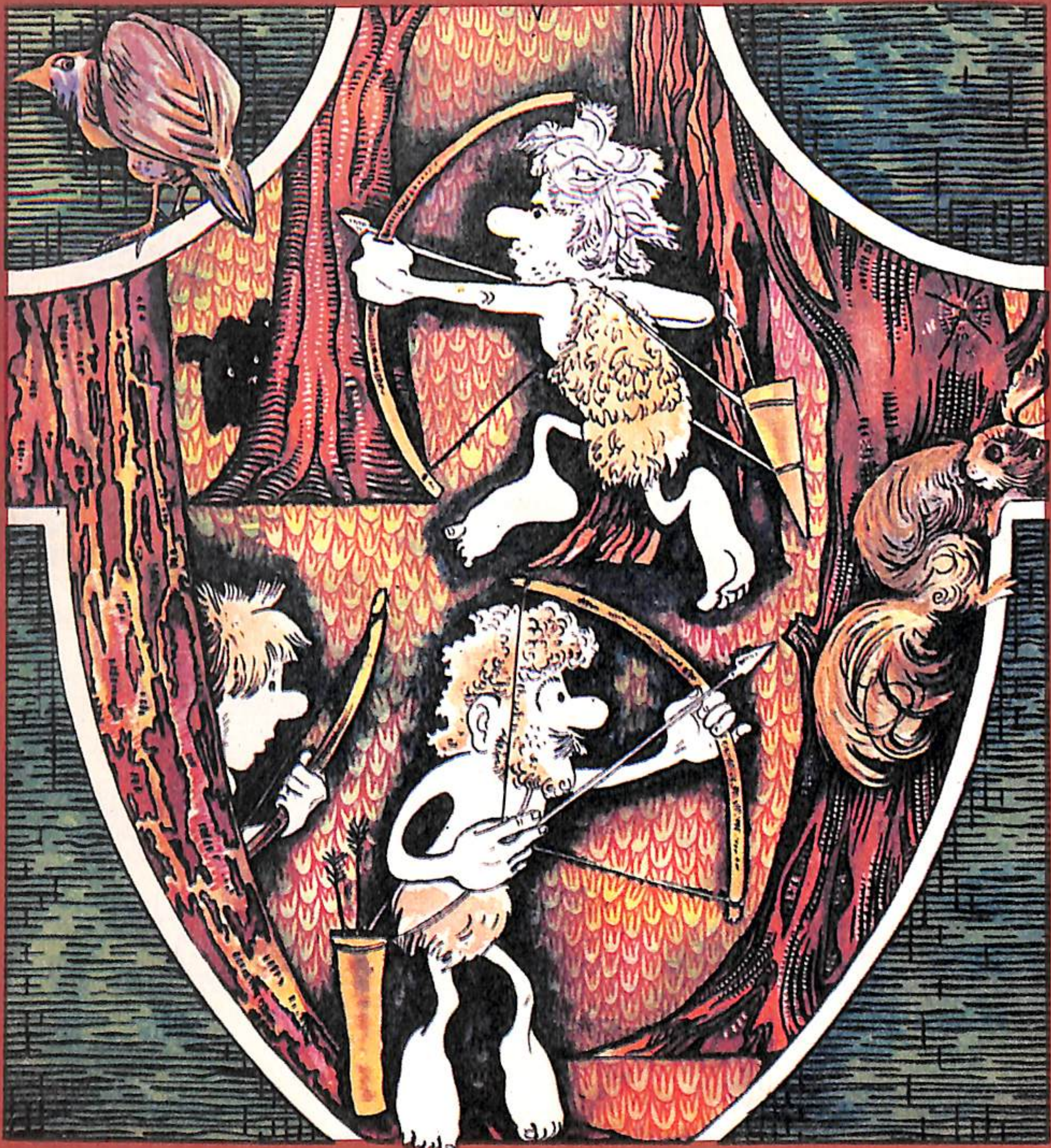

मनुष्य महाबली कैसे बना?

रमेश चंद्र, आठवीं

शैलेंद्र सिह चौहान, अलीराजपुर, झाबुआ, म.प्र.

पूर्वा जैन, दूसरी, मेघनगर, उज्जैन, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-9 अंक-1 जुलाई,93

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन : 563380

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

इस अंक में....

विशेष

17 ❑ मंगलू यमराज के दरबार में

कहानी

26 ❑ नटखट गधा

धारावाहिक

7 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
24 ❑ सवालीराम
25 ❑ खेल पहेली
31 ❑ हमारे वृक्ष -17 : लीची
33 ❑ चित्रकथा
34 ❑ माथा पच्ची
36 ❑ खेल कागज़ का

और यह भी

6 ❑ श्रद्धांजलि
14 ❑ सृजन
16 ❑ चर्चा किताबों की
38 ❑ तुम भी बनाओ

आवरण चित्र 'मनुष्य महाबली कैसे बना?' किताब से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

मैंने लड्डू खाए

एक दिन मैं स्कूल से आ रहा था, तो मुझे लड्डू की एक दुकान दिखी। मेरे मुंह में पानी आ गया। मैंने दुकानदार से कहा कि एक रूपए के लड्डू देना।

वह बोला एक रूपए का एक लड्डू आएगा। मैंने कहा, 'दो लड्डू देना हो तो दे दो।' उसने कहा, 'अच्छा ले लो।'

मैंने लड्डू लेकर खा लिए। दुकानदार बोला, 'पैसे दो।' मेरी जेब में पैसे थे ही नहीं। फिर दुकानदार ने मेरी ख़ूब पिटाई की।

❑ कमलेश, सातवीं, खापरखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

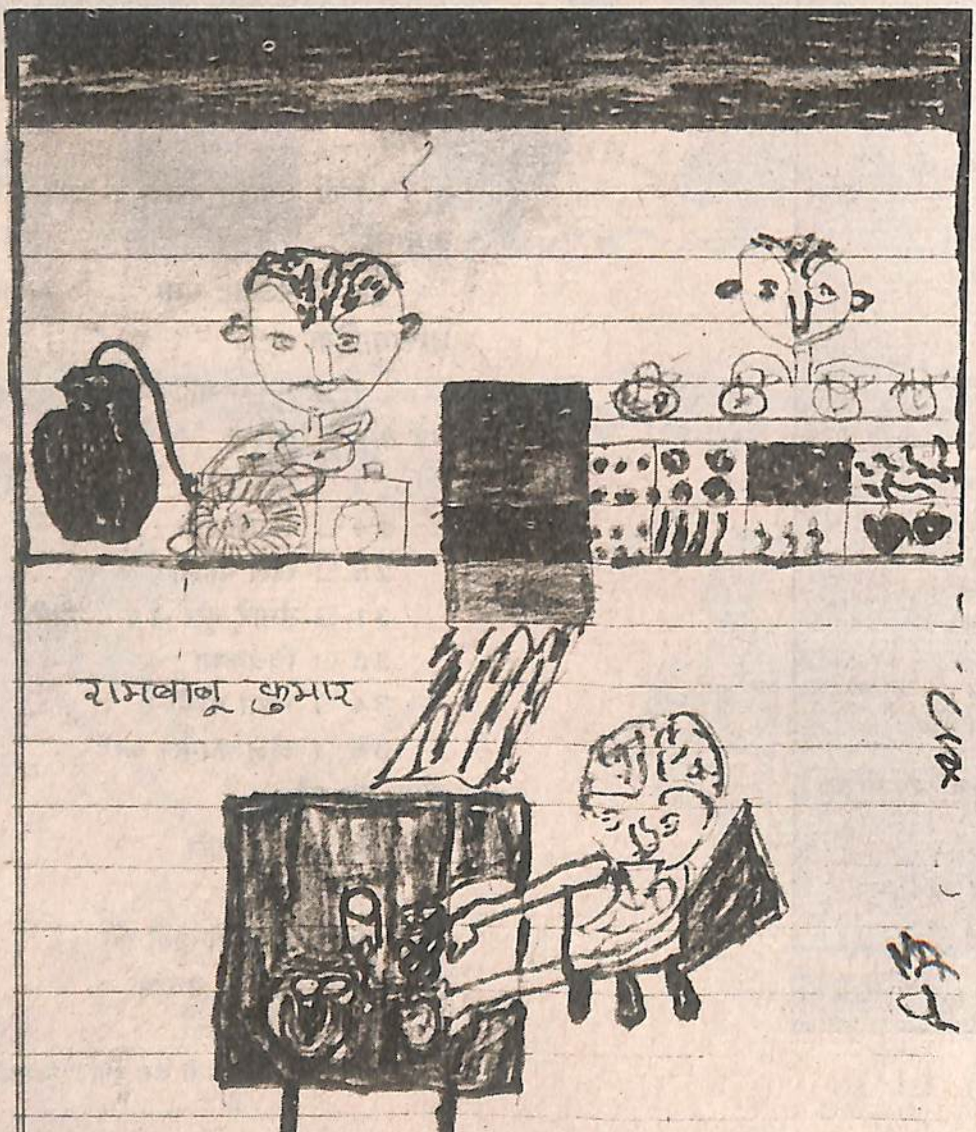

रामबाबू कुमार, सातवीं, इटारसी, म.प्र.

हमने पाला खरगोश

दो भाई थे। वे जानवरों से बहुत स्नेह करते थे। उनकी गर्मियों की छुट्टियां शुरू हो गई थीं। उन्होंने सोचा कि ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर होता है, इसलिए क्यों न कुछ ऐसा किया जाए, जिससे मन भी बहल जाए और समय भी कट जाए।

बड़ा भाई बोला, "चलो जंगल में जाकर कोई जानवर ढूंढते हैं और उसे पालते हैं।"

छोटा भाई बोला, "ठीक है। हम दोनों खरगोश पालेंगे। पालने के साथ-साथ उससे खेलेंगे।"

ऐसा सोचकर वे जंगल की ओर चले। जंगल पहुंचकर कभी वे झाड़ियों में देखते, कभी गड्ढों में झांकते। ऐसा करते-करते वे दोनों बीच जंगल में पहुंच गए। जंगल छोटा था, अतः ख़तरनाक जानवरों के होने की संभावना नहीं थी। वे खोज ही रहे थे कि अचानक एक खरगोश का बच्चा झाड़ियों में से निकलकर भागा। वे दोनों उसके पीछे दौड़े और आसानी से उसे पकड़ लिया। वे उसे पुचकारते हुए घर ले गए।

घर ले जाकर उन्होंने खरगोश को खाना दिया, बगीचे की घास खिलाई। इस तरह वे खरगोश को पालने लगे। छह-सात दिन बाद खरगोश कुछ दुबला दिखाई पड़ा। वे दोनों समझ नहीं पाए कि वह दुबला क्यों हो रहा है। वे अपने पिता के पास गए और उन्हें सारी बात बताई।

उनके पिता बोले, "यदि तुम्हें जंगल ले जाकर हमेशा रहने के लिए मजबूर किया जाए, तो तुम्हारा क्या हाल होगा?"

"हमारा मन वहां नहीं लगेगा।" बड़ा भाई बोला।

पिता ने कहा, "ठीक उसी प्रकार यहां का शोर-गुल और बिना पेड़-पौधों की यह जगह खरगोश को दुख पहुंचा रही है, अच्छी नहीं लग रही है। और इसीलिए वह दुबला हो रहा है। उसे अपने परिवार की याद भी आ रही होगी।"

"तो फिर हम इसका क्या करें।" छोटा भाई बोला।

उनके पिता खरगोश की पीठ सहलाते हुए बोला, "यदि तुम इसे खुश रखना चाहते हो तो उसी जगह पर छोड़ आओ, जहां से इसे लाए थे।"

दोनों भाईयों ने तय किया कि वे खरगोश को जंगल में छोड़ आएंगे। जब वे उस स्थान पर पहुंचे, जहां से खरगोश को लाए थे, तो उन्हें वहां एक और खरगोश घूमता मिला। जब उस खरगोश ने उन दोनों को देखा तो झाड़ियों में छिपने की बजाए वह उनकी ओर टुकर-टुकर देखने लगा।

उन्होंने अपनी गोदी में लिए खरगोश को छोड़ा तो वह उछलते हुए उस खरगोश के पास जा पहुंचा। वह उसे चाटने लगा। दोनों भाई समझ गए कि वह ज़रूर उस खरगोश की मां होगी। और फिर वे खुशी-खुशी घर लौट आए।

❑ रामनरेश यादव, दसवीं, नवापारा, रायगढ़, म.प्र.

मेरा पन्ना

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे

मुकेश सिंह, सातवीं, इटारसी, म.प्र.

एक दिन की बात है। मेरी सहेलियां आई थीं। सब सहेलियां कहने लगीं, दादी से कहानी सुनवाओ। मैंने कहा कि अभी नहीं और कभी, लेकिन वो नहीं मानीं।

तो हम लोग दादी के पास गए और दादी से कहा कि कहानी सुनाओ। इतने में भईया आ गया और शैतानी करने लगा, तो मेरी सहेलियां चली गईं।

इस बात पर मेरी ओर भईया की लड़ाई होने लगी। उसने मां से कहा कि देखो, 'सुषमा मुझे मार रही है।' इतने में मां बाहर आई और कुछ न पूछा और मुझे मारने लगी, और कहने लगी कि भाई से लड़ती है, ख़ूब पिटेगी। मैने कहा, 'मां मेरी भी बात सुनोगी या बस मारे जाओगी।' तब बड़ी मुश्किल से मां ने मेरी बात सुनी। फिर कहा कि अब किसी बात पर लड़ना नहीं और चली गई।

यह तो वही बात हुई कि 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।'

शफ़क अनवर, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

दो कविताएं

॥ एक ॥

राजहरा की लोहा खदान में
बिजली चमकती है
और मज़दूरों के मोहल्ले में
अंधेरा होता है!

॥ दो ॥

बात-बात में बिजली कटौती
कैसे होगी पढ़ाई
कैसे काम करे भईया
कैसे खाना पकाई!

❑ स्वाति गुहा, तीसरी, दल्ली राजहरा, दुर्ग, म. प्र.

मेरे घर हिरन आता है!

हमारे गांव में एक हिरन है। वह हिरन कई दिनों से हमारे घर आता था और आंगन में पेड़ के नीचे बैठा रहता था। वह कभी हम लोगों को नहीं मारता था। उस दिन भी वह रोज़ की तरह आया और अमरूद के पेड़ के नीचे बैठ गया।

कुछ देर बाद मेरा बछड़ा जंगल से आया। मैंने उसको बांधा और घास डाली। अपनी छोटी बहन से कहा कि तुम बछड़े के लिए पानी ले आओ। छोटी बहन पानी लेने चली गई। मैं वहीं पर बैठ गया। मैंने हिरन के मुंह की ओर हाथ बढ़ाया, तो हिरन ने मुझको मार दिया। मम्मी ने उसको मारकर भगा दिया। अब वह जब भी मेरे घर आता है, मम्मी उसको मारती है। मैं मम्मी से कहता हूं, तुम उसे मत मारो।

❑ नीरज तिवारी, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

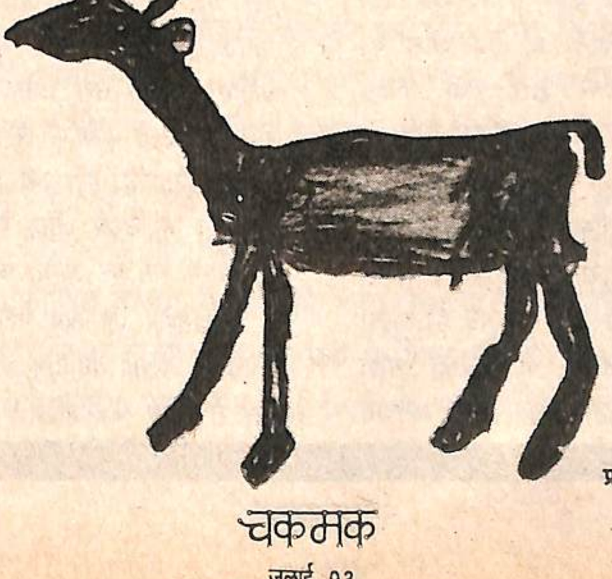

प्रवीण सारण, सामरधा, हरदा, म.प्र.

पिछली 12 मई, 93 की सुबह आधुनिक हिंदी साहित्य के वरिष्ठ कवि **शमशेर बहादुर सिंह** का हृदय गति रूक जाने से अहमदाबाद में निधन हो गया। वे बयासी साल के थे और पिछले कुछ सालों से एक गंभीर बीमारी से पीड़ित थे।

12 जनवरी, 1911 को देहरादून में जन्मे शमशेर नई कविता के महत्वपूर्ण कवि होने के साथ-साथ हिंदी गद्य में नई शैली सामने लाने वाले और अपनी तरह के ख़ास अनुवादक भी थे। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं, *कुछ कविताएं, कुछ और कविताएं, चुका भी हूं नहीं मैं, इतने पास अपने, उदिता, बात बोलेगी, काल तुझसे होड़ है मेरी।* गद्य रचनाओं में *दो आब, प्लॉट का मोर्चा, शमशेर की गद्य रचनाएं* आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त वे कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादकीय काम से भी जुड़े रहे। दिल्ली, विश्वविद्यालय में उन्होंने 'उर्दू हिंदी कोश' का संपादन किया। 1981 से 85 तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में 'प्रेमचंद सृजन' पीठ के अध्यक्ष भी रहे।

हालांकि बच्चों के लिए उन्होंने कुछ नहीं लिखा। लेकिन चकमक के पुराने पाठक समझ सकते हैं कि हम उनका ज़िक्र यहां क्यों कर रहे हैं। लुईस कैरोल द्वारा लिखित अंग्रेजी के प्रसिद्ध बाल उपन्यास *'एलिस इन वंडरलैंड'* का हिंदी अनुवाद *'आश्चर्य लोक में एलिस'* प्रस्तुत करके शमशेर जी ने वह काम किया है जो शायद कोई साहित्यकार बच्चों के लिए मौलिक रूप में अपनी रचना लिखकर भी नहीं कर सकता।

'आश्चर्य लोक में एलिस' चकमक में धारावाहिक रूप में शमशेर जी के सौजन्य से ही (मार्च 87 से अगस्त, 87) प्रकाशित हुआ है।

भले ही उन्होंने बच्चों के लिए न लिखा हो पर बच्चों की शिक्षा और बच्चों की पुस्तकों के बारे में वे क्या सोचते थे, यह जानने योग्य है। कोई पंद्रह साल पहले एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था, *'एक तो मैं सलाह देता हूं कि बच्चों को खेलना अवश्य चाहिए। आज बच्चों की जो किताबें हैं, वे सुंदर नहीं हैं। सस्ते में जो रंग आदि दे सकते हैं, दे देते हैं। मैं इस पक्ष में हूं कि बच्चों को 'अलिफ लैला', 'चंद्रकांता' जैसी गाथाएं बचपन में ही सुना देनी चाहिए, क्योंकि उस समय बच्चा भावनाओं में डूबा रहता है। ऐसी कथाओं से उसकी कल्पना शक्ति का विकास होता है। इस उम्र में सेक्स की भावना नहीं होती, न वह उधर जाता है। बचपन में पढ़ी किताबें कभी-कभी मन पर अमिट छाप छोड़ देती हैं।'*

शमशेर जी अब नहीं हैं, लेकिन साहित्य की दुनिया में उनका योगदान अमिट है। उन्हें चकमक की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

मनुष्य महाबली कैसे बना?

इस धरती पर एक महाबली रहता है। देखने में उसके हाथ छोटे-छोटे हैं, पर वह भीमकाय रेलवे इंजन को उठा सकता है। उसका एक क़दम यूं तो अधिक से अधिक दो फुट की दूरी ही तय कर सकता है। पर वह चाहे तो हज़ारों कोस रोज़ नाप सकता है।

उसके पंख नहीं हैं, पर वह बादलों के भी पार वहां जा सकता है, जहां कोई पक्षी भी नहीं पहुंच सकता।

उसकी आंखें अदृश्य चीज़ों को देख लेती हैं, उसके कान दुनिया के दूसरे छोर पर बोले गए शब्द सुन लेते हैं।

वह इतना बलवान है कि पहाड़ों के आरपार छेद कर सकता है और झरनों को रोक सकता है।

वह धरती का चेहरा बदल रहा है, जंगल उगा रहा है, समुद्रों को जोड़ रहा है, रेगिस्तान में पानी ला रहा है।

यह महाबली कौन है?

अब तक तुम समझ ही गए होगे कि हम मनुष्य की बात कर रहे हैं।

हां, मनुष्य ही यह महाबली है। महाबली बनकर उसने जहां एक और धरती का चेहरा संवारा है, तो दूसरी तरफ उसे बिगाड़ा भी है। जंगल उगाया है तो कहीं उजाड़ा भी है। इस महाबली की ऐसी तमाम करतूतों के बारे में तुम चकमक में पढ़ते ही रहते हो।

लेकिन वह महाबली बना कैसे? क्या शुरू से ही वह महाबली था? नहीं! मनुष्य धीरे-धीरे समय के साथ-साथ महाबली बना है!

मनुष्य के महाबली बनने की इस रोचक कहानी पर एक रूसी किताब है, 'मनुष्य महाबली कैसे बना।' इसके लेखक हैं मि. इल्यीन एवं ये. सेगाल। इसे मास्को के रादुगा प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इसका हिंदी अनुवाद भारत में पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस (प्रा.) लिमिटेड, दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

इस किताब को पढ़ते हुए कई बार यह ख़्याल आया कि चकमक के पाठकों को भी यह कहानी पढ़वानी चाहिए। वैसे इस किताब के कुछ हिस्सों को हमने चकमक में पहले भी छापा है। पूरी किताब को ज्यों का त्यों चकमक में प्रकाशित करना किताब की भाषा तथा परिवेश के कारण संभव नहीं है। इसीलिए हमने इस किताब के कुछ रोचक हिस्सों को चकमक के लिए संपादित किया है। जिसे हम उक्त दोनों प्रकाशनों के सौजन्य से धारावाहिक रूप में प्रस्तुत करने जा रहे हैं। चित्र मूल किताब से ही लिए हैं। तो इस अंक में पढ़ो मनुष्य के महाबली बनने की रोचक कहानी की पहली किस्त।

नज़र न आने वाला पिंजरा

एक ज़माना था जब मनुष्य महाबली नहीं था। वह प्रकृति का मालिक नहीं था, बल्कि उसका दास था।

प्रकृति पर उसका भी उतना ही वश था जितना जंगल के किसी जानवर या उड़ने वाले पक्षी का होता है। वह उतना ही आज़ाद था, जितना कोई जानवर या पक्षी।

इस बात को समझने के लिए थोड़ा विस्तार में जाना पड़ेगा।

एक पुराना फ़िल्मी गीत है, शायद तुमने भी सुना हो कभी-

पंछी बनी उड़ती फिरूं मस्त गगन में

आज मैं आज़ाद हूं दुनिया के चमन में

लेकिन क्या पंछी सचमुच आज़ाद होते हैं? हां, यह ठीक है कि उनके पंख होते हैं। पंख उन्हें जंगलों, पहाड़ों और सागरों के पार कहीं भी ले जा सकते हैं। ऊपर, ऊंचे आसमान पर पक्षियों की कतारें पंख फड़फड़ाती हुई चली जाती हैं और हम नीचे अचरज से सिर उठाए कहते हैं, "देखो तो इन पक्षियों को, ये कहीं भी जा सकते हैं।"

तुमने प्रवासी पक्षियों के बारे में पढ़ा होगा। प्रवासी पक्षी मौसम बदलने पर हज़ारों किलोमीटर उड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं। क्या वे सिर्फ़ इसलिए उड़कर जाते हैं कि उन्हें सैर करना अच्छा लगता है? नहीं, जो चीज़ उन्हें ले जाती है, वह आनंद नहीं, आवश्यकता है। और एक स्थान से दूसरे स्थान जाने की यह आदत पक्षियों की असंख्य पीढ़ियों के लाखों वर्ष लंबे जीवन संघर्ष के दौरान पैदा हुई है।

तुम इस बात पर भी अचरज कर सकते हो कि जब पक्षी उड़ सकते हैं, तो पक्षियों की हर जाति संसार के हर कोने में क्यों नहीं पाई जाती।

अगर ऐसा होता तो हमारे घर हमें गौरयों की बजाए तोतों से भरे दिखते। मैदान में रहने वाले भरत पक्षी की मधुर आवाज़ से जंगल गूंजता। लेकिन ऐसा नहीं है और न कभी हो सकता है, क्योंकि पक्षी जितने आज़ाद नज़र आते हैं, दरअसल उतने हैं नहीं। दुनिया में हर पक्षी की अपनी जगह है। कोई जंगल में रहता है, कोई खेत में, तो किसी का ठिकाना समुद्र के तट पर है।

सोचो तो, उक़ाब (गरूड़ की एक जाति) के पंख कितने शक्तिशाली होते हैं। तिस पर भी अपना घोंसला बनाने की जगह चुनते समय वह एक नज़र न आने वाली सीमा को कभी पार नहीं करता। सुनहरा उक़ाब खुले वृक्षहीन मैदान में अपना विशाल घोंसला नहीं

बनाएगा और मैदानी उक़ाब कभी जंगल में अपना घोंसला नहीं बनाएगा।

वास्तव में दिखाई नहीं देने वाली एक बाड़ जंगल को मैदान से अलग कर देती है, जिसे कोई भी जानवर या पक्षी पार नहीं कर सकता।

इतना ही नहीं, जंगल या मैदान में भी कई सारी बाड़ें हैं। जंगल में घूमते समय हम देख सकते हैं कि कहीं अचानक देवदार की जगह चीड़ के पेड़ आ जाते हैं, कहीं हमें ज़मीन पर बिछी हुई काई नज़र आती है, तो कहीं ज़मीन घास से ढकी होती है।

जंगल भी अपने आप में कई मंज़िलों वाले मकान की तरह होता है। हालांकि मनुष्य ऐसी किसी बहुमंज़िली इमारत में अपना घर बार-बार बदल सकता है, लेकिन जंगल के ये निवासी नहीं बदल सकते।

चीड़ के किसी जंगल का उदाहरण लें। ऐसे जंगल में हर मंज़िल के अपने बांशिदे होते हैं। बाज अपना घोंसला सबसे ऊंचाई पर बनाता है। उसके नीचे, किसी पेड़ के कोटर में कठफोड़वा अपने परिवार के साथ रहता है। किसी अन्य पक्षी ने अपना घोंसला झाड़ी में बनाया है। जंगली मुर्गा, जो निचली मंज़िल पर रहता है, ज़मीन पर घूमता है। ज़मीन के नीचे तहखाने में, जंगली चूहों के बिल हैं।

इस विशाल इमारत में सभी तरह के निवास स्थान हैं। ऊपरी मंज़िल धूपदार और सूखी है। निचली मंज़िल अंधेरी और नमी वाली है। ऐसी ठंडी जगह भी हैं जो गर्मियों में काम आएं और ऐसे निवास भी हैं, जो बारहों मास काम आएं।

लेकिन जंगली मुर्गा कभी भी अपने अंधेरे, नमी वाले मकान की जगह सूखी, धूपभरी अटारी पसंद नहीं करेगा। और अटारी पर रहने वाला बाज कभी अपना घोंसला पेड़ के नीचे ज़मीन पर ले जाने को तैयार नहीं होगा।

चलो, एक दूसरे उदाहरण में यह मान लें कि किसी गिलहरी ने अपने घर को मैदान में रहने वाले किसी चूहे से बदल लिया है। गिलहरी का घर पेड़ में ऊंचाई पर बने किसी कोटर में या डालियों पर कहीं है। जबकि चूहे का घर ज़मीन के नीचे बिल में है।

अब नए घर में पहुंचने के लिए चूहे को पेड़ पर चढ़ना होगा। लेकिन वह कैसे चढ़ेगा क्योंकि उसके पंजे पेड़ पर चढ़ने के लिए काम नहीं आएंगे। दूसरी ओर गिलहरी भी ज़मीन के भीतर नहीं रह पाएगी, क्योंकि उसकी आदतें और तौर तरीक़े पेड़ों पर रहने वालों की तरह के ही हैं।

इसीलिए अगर गिलहरी और चूहे अपने घरों की अदला-बदली करें, तो उन्हें अपनी दुमों और पंजों की भी अदला-बदली करना पड़ेगी।

अगर हम इसी तरह अन्य कुछ जानवरों आदि के रहन-सहन का बारीकी से अध्ययन करें तो पाएंगे कि उनमें से हर कोई दुनिया में अपनी जगह से दिखाई न देने वाली एक जंज़ीर से बंधा है- एक ऐसी जंज़ीर, जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल है।

तो एक तरह से जंगल के जानवर आज़ाद नहीं हैं, बल्कि क़ैदी हैं।

जंगल की दुनिया उन बहुतेरी दुनियाओं में से एक है जिनसे मिलकर यह बड़ी दुनिया बनती है।

धरती पर केवल जंगल और मैदान ही नहीं हैं। पहाड़ हैं, घाटियां हैं, समुद्र हैं और झीलें भी हैं।

हर पहाड़ पर दिखाई न देने वाली बाड़ें एक छोटी दुनिया को दूसरी से अलग करती हैं। हर समुद्र दिखाई न देने वाली छतों से पानी के नीचे कई मंज़िलों में बंटा है। समुद्र के अंदर एक अलग दुनिया है।

अब इस बात पर ग़ौर करो कि क्या एक दुनिया के निवासी दूसरी दुनिया में जा सकते हैं? क्या समुद्र में रहने वाली मछली समुद्र को छोड़ सूखी ज़मीन पर जा सकती है?

ऐसा होना एकदम असंभव लगता है। मछली का शरीर पानी के जीवन के हिसाब-किताब से बना है। ज़मीन पर रहने के लिए गलफड़ों की जगह फेफड़ों की, और परों की जगह पैरों की ज़रूरत होगी। मछली समुद्र के जीवन और सूखी ज़मीन के जीवन में तभी अदला-बदली कर सकती है, जब वह मछली नहीं रहे।

क्या ऐसा हो सकता है कि मछली, मछली न रहे?

अगर हम यह सवाल किसी वैज्ञानिक से पूछें, तो वह बताएगा कि कई लाख वर्ष हुए मछली की कुछ जातियां सचमुच सूखी ज़मीन पर आ गई थीं और फिर वे मछलियां भी न रहीं। लेकिन जल से थल पर आने में एक-दो नहीं, लाखों वर्ष लगे।

आस्ट्रेलिया की नदियों में पाई जाने वाली श्रृंगी मछली की एक जाति ऐसी है, जिसके गलफड़े फेफड़े से मिलते-जुलते हैं। सूखे मौसम में जब पानी का स्तर गिरने लगता है तो नदियों में कीचड़ भर रह जाता है। ऐसे में अन्य मछलियां तो मर जाती हैं, लेकिन श्रृंगी मछली अपने फेफड़ेनुमा गलफड़ों से हवा लेकर जिंदा बनी रहती है।

अफ्रीका और दक्षिण अमरीका में मछलियों की कुछ ऐसी जातियां

हैं, जो सूखा पड़ने पर कीचड़ में घुस जाती हैं और बारिश के आने तक वहीं अपने गलफड़ेनुमा फेफड़ों से सांस लेती चुपचाप पड़ी रहती हैं।

इसका मतलब है कि मछली फेफड़े विकसित कर सकती थी।

ऐसे और भी तथ्य हैं, जिनसे पता चलता है कि मछलियां सचमुच पानी से निकलकर ज़मीन पर आ सकती थीं। खुदाई करते समय पुरातत्वविदों (जो पुरानी जगहों या चीज़ों के बारे में खोजबीन करते हैं) को एक ऐसे जानवर की हड्डियां मिलीं, जो बहुत कुछ मछली जैसा भी था, लेकिन मछली नहीं था। वास्तव में यह एक ऐसा प्राणी था जो पानी तथा ज़मीन दोनों पर रह सकता था। देखने में मेंढ़क जैसा। पंखों की जगह इसके बाकायदा पांच उंगलियों वाले पैर थे। जब यह कुछ समय के लिए तट पर आता था, तो यह इन पैरों पर धीरे-धीरे ही सही, लेकिन चल सकता था।

सामान्य मेंढक का ज़रा बारीकी से अवलोकन करो। अंडे से निकलने के समय यह टेडपोल अवस्था में होता है। और टेडपोल तथा मछली की बाहरी शारीरिक बनावट में बहुत कम फ़र्क़ होता है।

इसलिए हम यह कह सकते हैं कि कई लाख साल पहले मछली की कुछ जातियों ने उस बाड़ को पार कर लिया, जो समुद्र को सूखी ज़मीन से अलग करती है। लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान वे बदल गईं। मछली से उभयचरों (जल और थल पर रहने वालों का) विकास हुआ। आगे चलकर ये सरीसृप (यानी रेंगने वाले जीवों) के पूर्वज हुए। सरीसृप स्तनधारी जंतुओं और पक्षियों के आदि-पूर्वज थे। इनमें से कई जंतु और पक्षी ऐसे भी हैं जो पानी का रास्ता बिलकुल ही भूल गए।

प्रत्येक सजीव प्राणी संसार में अपनी जगह के लिए, अपने पर्यावरण के लिए अनुकूलित (यानी बना होता है) रहता है। लेकिन संसार में अचल और अटल कुछ भी नहीं है- गरम जलवायु ठंडी हो जाती है, जहां कभी मैदान थे, वहां पहाड़ पैदा हो जाते हैं, समुद्र की जगह धरती ले लेती है, सदाबहार जंगलों का स्थान पतझड़ वन ले लेते हैं।

और जब आसपास की हर चीज़ बदल जाती है, तो सजीव प्राणियों का क्या होता है? वे भी बदल जाते हैं।

लेकिन इसका फैसला हमारे हाथ में नहीं होता कि हम बदलेंगे किस तरह। हाथी अचानक पत्ते या घास छोड़कर मांस खाना शुरू नहीं कर सकता। भालू यह कहकर कि, 'मुझे गर्मी लग रही है।' अपने बाल नहीं झड़ा सकता। वास्तव में यह बदलना हमारी इच्छा से नहीं होता। बदलते इसलिए हैं कि हमें नए आहार और नई परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

यह ज़रूरी नहीं है कि होने वाले परिवर्तन प्राणियों के लिए अच्छे

ही हों, उनसे नुकसान भी हो सकता है।

अनेक बार जो जंतु या पौधे अपने को नए पर्यावरण में पाते हैं, वे सूख जाते हैं, क्योंकि उन्हें वे चीज़ें नहीं मिल पातीं, जो उन्हें जीते रहने के लिए चाहिए, जैसी कि उनके पूर्वजों को मिल रही थीं। वे कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। ठंड से जम जाते हैं, या फिर गर्मी से सूख जाते हैं। अपने शत्रुओं के लिए वे आसान शिकार बन जाते हैं। उनकी संतान और भी कमज़ोर होती है और इसीलिए उसमें नई परिस्थितियों में जीने की क्षमता और भी कम होती है। अंत में सारी जाति ही मर जाती है, क्योंकि वह परिवर्तनों पर काबू नहीं पा सकती।

लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि सजीव प्राणी ऐसे तरीक़े से बदलें जो उनके लिए हानिकर नहीं, बल्कि लाभप्रद हो। अनुकूल परिस्थितियों में ऐसे लाभप्रद परिवर्तन बाद की पीढ़ियों को मिलते चले जाते हैं। वे इकट्ठे होते जाते हैं और साथ ही दृढ़ और पक्के भी।

समय बीतने पर यह देखने में आता है कि संतानें अपने पूर्वजों से नहीं मिलतीं, उनकी प्रकृति ही बदल गई है, वे उन परिस्थितियों में भी रह सकती हैं, जो उनके पूर्वजों के लिए हानिकर थीं। वे जीवन की नवीन परिस्थितियों की आदी हो जाती हैं। इसे वैज्ञानिक प्राकृतिक वरण कहते हैं। ऐसे में जो प्राणी अपने को नई परिस्थितियों के लिए अनुकूलित नहीं कर सके, वे ख़त्म हो गए, जो कर सके, वे बच गए।

पर्यावरण के परिवर्तन से सजीव प्राणी में परिवर्तन आने की ऐसी कई मिसालें हैं।

क्या तुम विश्वास करोगे कि घोड़ा एक ऐसे छोटे से जंतु से उत्पन्न हुआ है, जो इतना छोटा था कि घने जंगलों में घूमता हुआ, गिरे हुए पेड़ों के तनों पर से चढ़कर आराम से निकल जाया करता था। इस जानवर के खुर नहीं थे, बल्कि पांच उंगलियों वाले पैर थे। इनसे जंगल में असमतल ज़मीन पर भी अच्छी तरह से पैर टिकाने में मदद मिलती थी।

समय बीतने पर बड़े-बड़े घने वन छितरकर मैदान बनने लगे। घोड़े के वनवासी पूर्वजों को भी खुले मैदान में आना पड़ता था। जब ख़तरा सिर पर होता, तो जंगल की तरह छिपने के लिए कोई ठौर नहीं होता। सिर्फ़ भागकर ही बचा जा सकता था। ऐसे में कितने ही वनवासी जानवर ख़त्म ही हो गए। केवल सबसे लंबी टांगों और तेज़ भागने वाले ही बच सके, जीते रहे।

घोड़े के पूर्वजों ने जाना कि दौड़ने वालों को अनेक उंगलियों की ज़रूरत नहीं है। बल्कि एक ही और वह भी मज़बूत तथा सख़्त हो तो काफ़ी है। धीरे-धीरे घोड़ों की तीन उंगलियों वाली जाति और अंत में एक उंगली वाली जाति पैदा हुई। हम आज जिस घोड़े को देखते हैं,

उसके पैरों में उंगलियां नहीं बस एक मज़बूत खुर है।

घोड़े ने जब जंगल का अपना पहला घर छोड़ा, तो केवल उसके पैर ही नहीं बदले। उसकी सारी देह ही बदल गई। मिसाल के लिए उसकी गरदन को ही लो। अगर उसकी टांगें लंबी हो जातीं, जबकि गरदन छोटी ही रहती, तो घोड़ा अपने पैरों के नीचे की घास तक नहीं पहुंच पाता। ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि प्रकृति ने छोटी गरदन वाले घोड़े को अस्वीकार कर दिया, जैसे वह छोटी टांगों वाले घोड़े को पहले ही अस्वीकार कर चुकी थी।

इतना ही नहीं घोड़े के दांत भी बदल गए। मैदान में घोड़े को मोटे, खुरदरे पौधे खाने पड़ते थे, जिन्हें उसे पहले अपने दांतों से पीसना पड़ता था, इसलिए उसके दांत भी बदल गए। अब घोड़ों के दांत बाकायदा चक्की के पाटों और सिलबट्टों की तरह होते हैं, जो भूसे तक को पीस सकता है।

घोड़े की टांगों और उंगलियों, गरदन और दांतों को बदलने के इस ज़बरदस्त काम के पूरा होने में पांच करोड़ साल लगे।

इस सबसे यह निष्कर्ष निकलता है कि समुद्र को भूमि से और जंगल को मैदानों से अलग करने वाली बाड़ें स्थायी नहीं हैं। सागर सूख जाते हैं या भूमि को जल से ढक देते हैं। मैदान रेगिस्तान में बदल जाते हैं। समुद्र के निवासी सूखी भूमि पर रेंग आते हैं। जंगल के निवासी मैदानों में रहने लगते हैं। लेकिन जानवर के लिए अपनी नन्हीं-सी दुनिया को छोड़ना, अपने को अपने आसपास से बांधने वाली जंज़ीरों को तोड़ना कितना कठिन है और इन जंज़ीरों को तोड़ने के बाद भी वह आज़ाद नहीं होता, बल्कि एक दूसरे पिंजरे में चला जाता है।

जब घोड़े ने जंगल को छोड़ मैदानों को अपनाया, तो वह वनवासी नहीं रहा। मछली की एक जाति ने जहां एक बार पानी के बाहर अपना रास्ता निकाला और सूखी भूमि पर आ गई, फिर वह कभी समुद्र को नहीं लौटी, क्योंकि ऐसा करने के लिए उसे फिर से बदलना पड़ता। समुद्र को लौटकर जाने वाली कितनी ही जातियों को जो ज़मीन पर रहने लगी थीं, अपने को फिर से बदलना पड़ा।

यह तो हुई कुछ जानवरों की बात। लेकिन मनुष्य स्वयं किस प्रकार का जानवर है- मैदानों का, जंगलों का या पहाड़ों का?

तुम भी इस बात पर विचार करो। अगले अंक में हम मनुष्य के बारे में यह देखेंगे कि आदिकाल से अब तक उसने अपने को किस तरह बदला है?

चित्र : अलेक्सेई कोल्ली तथा ग्रोमान
प्रस्तुति : राजेश उत्साही

सृजन सृजन सृजन

अक्टूबर, 93 का अंक चकमक का सौवां अंक होगा। यक़ीन नहीं आ रहा न! हमें भी नहीं हो रहा। लेकिन सच तो यही है कि देखते ही देखते सौ अंक पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर हम तुम्हें एक बार फिर **सृजन** में भाग लेने के लिए न्यौता दे रहे हैं। **सृजन** तो तुम समझते हो न। **सृजन** यानी कुछ बनाना, गढ़ना या फिर रचना।

तो आओ सृजन में भाग लो, हिस्सा लो, शामिल हो जाओ।

सृजन में भाग लेने के लिए **कोई नियम-कानून या शर्तें नहीं हैं।** हां कुछ छोटी-मोटी बातों का ध्यान अवश्य रखना होगा।

- **सृजन** में भाग लेने के हक़दार वे पाठक ही हैं जिनकी **आयु 31 दिसंबर, 93 को 17 वर्ष** से अधिक नहीं है।
- वैसे **सृजन** के लिए पूरी स्वतंत्रता है। पर आसानी के लिए रचनाओं के चार वर्ग बनाएं हैं-

  कहानी ● कविता, ● निबंध ● चित्र

  रचनाओं का **विषय कोई भी** हो सकता है पर हमारी अपेक्षा है कि रचनाएं **पर्यावरण, विज्ञान तथा रोज़मर्रा की घटनाओं, समस्याओं, अनुभवों** और तुम्हारी **कल्पनाओं** पर आधारित हों।
- रचनाएं छोटी या बड़ी, कैसी भी हो सकती हैं। कोई शब्द सीमा नहीं।
- हमारे पास आमतौर पर जो रचनाएं आती हैं उनमें कुछ किसी दूसरी **पत्रिका या किताब से नकल की** गई होती हैं। हमें यक़ीन है कि **सृजन** में तुम जो रचनाएं भेजोगे वह **मौलिक** होंगी। साथ ही एक बात और, रचना **अपनी लिखावट** में ही भेजना।
- रचना भेजने के लिए कोई भी **कागज़** या **डाक सामग्री** (पोस्टकार्ड अंतर्देशीय आदि) का उपयोग कर सकते हो। पर अंतर्देशीय के भीतर कुछ मत रखना।
- **चित्र भी स्याही** या **रंग** जिससे तुम बनाना चाहो, बना सकते हो। जो तुम्हारे पास हो चलेगा।
- रचनाओं की संख्या पर रोक नहीं है। कोई भी सभी विधाओं की रचनाएं या एक ही विधा की कई रचनाएं भेज सकता है।

सृजन सृजन सृजन

- चुनी हुई रचनाएं चकमक में प्रकाशित होंगी। जिनकी रचनाएं चुनी जाएंगी, **उन्हें उपहार में कुछ सुंदर पुस्तकें** भेजी जाएंगी। एक काम तो हम करेंगे ही, **सृजन** में भाग लेने वाले प्रत्येक भागीदार को चकमक का वह अंक जो **सृजन** की सामग्री से बनेगा, भेजा जाएगा। अब तो खुश! तो फिर लग जाओ **सृजन** में।
- **सृजन में भाग लेने के लिए कोई फ़ीस या प्रवेश शुल्क नहीं है। बस सृजन करो और 31 अगस्त, 1993 तक हमें भेज दो।**
- प्रत्येक रचना के साथ अपना **नाम, जन्मतिथि, पूरा पता (डाक घर एवं पिन कोड सहित)** ज़रूर लिखना।
- अपनी रचनाएं इस पते पर भेजना-

एकलव्य
ई-1/208
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
पिनकोड-462 016

- अपने लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड या अंतर्देशीय पर **सृजन** लिख दोगे तो हमें आसानी होगी।

बड़ों से, चाहे वे शिक्षक हों, माता-पिता हों या फिर अभिभावक- *एक बात कहना चाहते हैं कि वे अपने नन्हें-मुन्नों को प्रोत्साहित ज़रूर करें पर उनकी सृजनात्मकता के आड़े न आएं। उनके प्रयास में दखलंदाजी न करें। वे जो, जैसा लिख रहे हैं/ बना रहे हैं- उन्हें लिखने दें/ बनाने दे/ चाहे उनकी लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी अस्पष्ट ही क्यों न हो, वैसी ही रहने दें। ऐसा नहीं है कि हम साफ़-सुथरी लिखावट नहीं चाहते, पर हम यह भी जानते हैं कि हर बच्चे के लिए वे सारे साधन, सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं जिनकी मदद से वह अपनी अभिव्यक्ति को सुंदर ढंग से सामने रख सके। कुछ ऐसे ही कारणों से हमने ऐसे आयोजनों में बनाए जाने वाले बंधनों, नियमों से* ***सृजन*** *को मुक्त रखा है। आप भी उन्हें अपने निर्देशों से मुक्त रखें। उसने ख़ुद से कुछ रचा है, बनाया है,* ***सृजन*** *किया है, यह अहसास बनाए रखें। मत भूलें कि बच्चे के इस* ***सृजन*** *में भी आपकी एक अप्रत्यक्ष भूमिका है।*

शिक्षा व्यवस्था पर सवाल

चकमक सिर्फ़ बच्चों द्वारा ही नहीं बल्कि उनके अभिभावकों तथा शिक्षकों आदि के द्वारा भी पढ़ी जाती है। इसी समझ के चलते, समय-समय पर चकमक में ऐसी सामग्री का प्रकाशन भी होता रहा है, जो मुख्यतया बड़ों के लिए ही होती है। चकमक के इस अंक में भी ऐसी सामग्री है और इस कालम में भी इस बार ऐसी ही एक किताब का ज़िक्र हो रहा है, जो बच्चों की शिक्षा के मुद्दे को बड़ों के सामने रखकर शिक्षा व्यवस्था पर कई तीखे सवाल उठाती है।

यह उल्लेखनीय है कि इंस्टीट्यूट फॉर कल्चरल एक्शन, जेनेवा द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी किताब *'डेंजर : स्कूल'* का हिंदी में भारतीय रूपांतर *'ख़तरा : स्कूल'* शीर्षक से चकमक में सितंबर, 88 से धारावाहिक रूप में तेरह किस्तों में प्रकाशित हो चुका है। रूपांतरण किया था- चकमक के संपादक विनोद रायना ने।

इसी रूपांतरण को लखनऊ से प्रकाशित होने वाली एक अनियतकालीन पत्रिका *'समकालीन दस्तावेज'* ने अपने चौथे अंक में एक मुश्त प्रकाशित किया है।

मूलरूप से इस किताब में दुनिया के कुछ प्रमुख शिक्षाविदों और दार्शनिकों द्वारा शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था पर उठाए सवालों और उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन के विचारों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस किताब की एक विशेषता यह भी है कि ज़्यादातर सामग्री को चित्रों तथा चित्रकथाओं में डालकर कहा गया है। इस कारण यह किताब शिक्षा से संबंधित कुछ जटिल अवधारणाओं को भी सरल रूप में सामने रख पाती है।

चित्र मूल किताब के ही हैं। हां, जहां भारतीय परिवेश के मान से नए चित्रों की ज़रूरत थी, वहां उन्हें डाला गया है।

किताब की शुरूआत एक स्कूल के खुलने और उसमें छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों की मनस्थिति के चित्रण से शुरु होती है। फिर इस बात की खोजबीन की कि जब स्कूल नहीं थे तो शिक्षा का क्या मतलब था, स्कूल क़ा विकास कैसे हुआ, ग़रीबों और अमीरों के स्कूल कैसे उभरे आदि पर विचार किया गया है।

आज की शिक्षा व्यवस्था की ख़ामियों, कमज़ोरियों पर सिलसिलेवार टिप्पणी हैं। जैसे स्कूल सामाजिक एवं सांस्कृतिक अंतरों को किस तरह नज़र अंदाज करता है, स्कूल अपने घोषित मूल्यों के अलावा, चुपचाप कुछ ऐसे संस्कार भी छात्रों में डालता है, जो उसकी प्रगति में बाधक ही होते हैं, आदि।

अंत में इस निराशाजनक स्थिति को बदलने का क्या तरीक़ा हो सकता है, इस पर कुछ विचार हैं।

कुल मिलाकर यह किताब शिक्षा से जुड़े और उसमें रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को पढ़नी चाहिए।

❑ **राजेश उत्साही**

किताब : ख़तरा : स्कूल (समकालीन दस्तावेज-4)
संपादक : प्रशांत कुमार
मूल्य : बारह रुपये
संपर्क : 3/29, पत्रकार पुरम, गोमती नगर, लखनऊ 226010

मंगलू यमराज के दरबार में

मंगलू एक आंदोलन में गोली से मर गया,
मरते ही सीधे यमराज के घर गया।
यमराज भैंसे पर बैठ दरबार में पधारे,
मूंछों पर ताव दिया,
फिर बड़े ध्यान से पूरे दरबार का
जायज़ा लिया।
यमदूतों को बुलाया,
अपना आदेश सुनाया-
''आज मरकर आए सभी लोगों को बुलाओ
जल्दी से उनकी कतारें लगवाओ,
साथ में सबके बही-खाते लाओ।''

यमदूतों की टोली इधर-उधर गई,
पल भर में यमराज की टेबुल
बही खातों से भर गई।
बन गई वही-खातों की मीटरों ऊंची दीवार।
और सामने लग गई अलग-अलग तरह के
लोगों की कतार।
कोई स्टोव से जलकर मरा था,
कोई अपने को छलकर मरा था।
कोई गोली से मरा था,
कोई बमबारी से।
कोई लड़कर मरा था, कोई लाचारी से।
कोई ट्रेन दुर्घटना से मरा था, कोई जहाज़
दुर्घटना से
कोई कालाहांडी से आया था,
कोई पटना से
किसी कतार में झूठी मुठभेड़ में
मारे गए डाकू थे।
किसी में पुलिस के महान लड़ाकू थे।

कोई जाति के कारण मरा था,
कोई धर्म के कारण,
कोई चुल्लू भर पानी में डूबकर मरा था,
याने शर्म के कारण।
कोई दारू पीकर मरा था, कोई दवाई खाकर।
कोई भूख से मरा था, कोई मलाई खाकर।
जितनी तरह की मृत्यु, उतनी कतार।
कतारों से भर गया था, यमराज का पूरा दरबार।

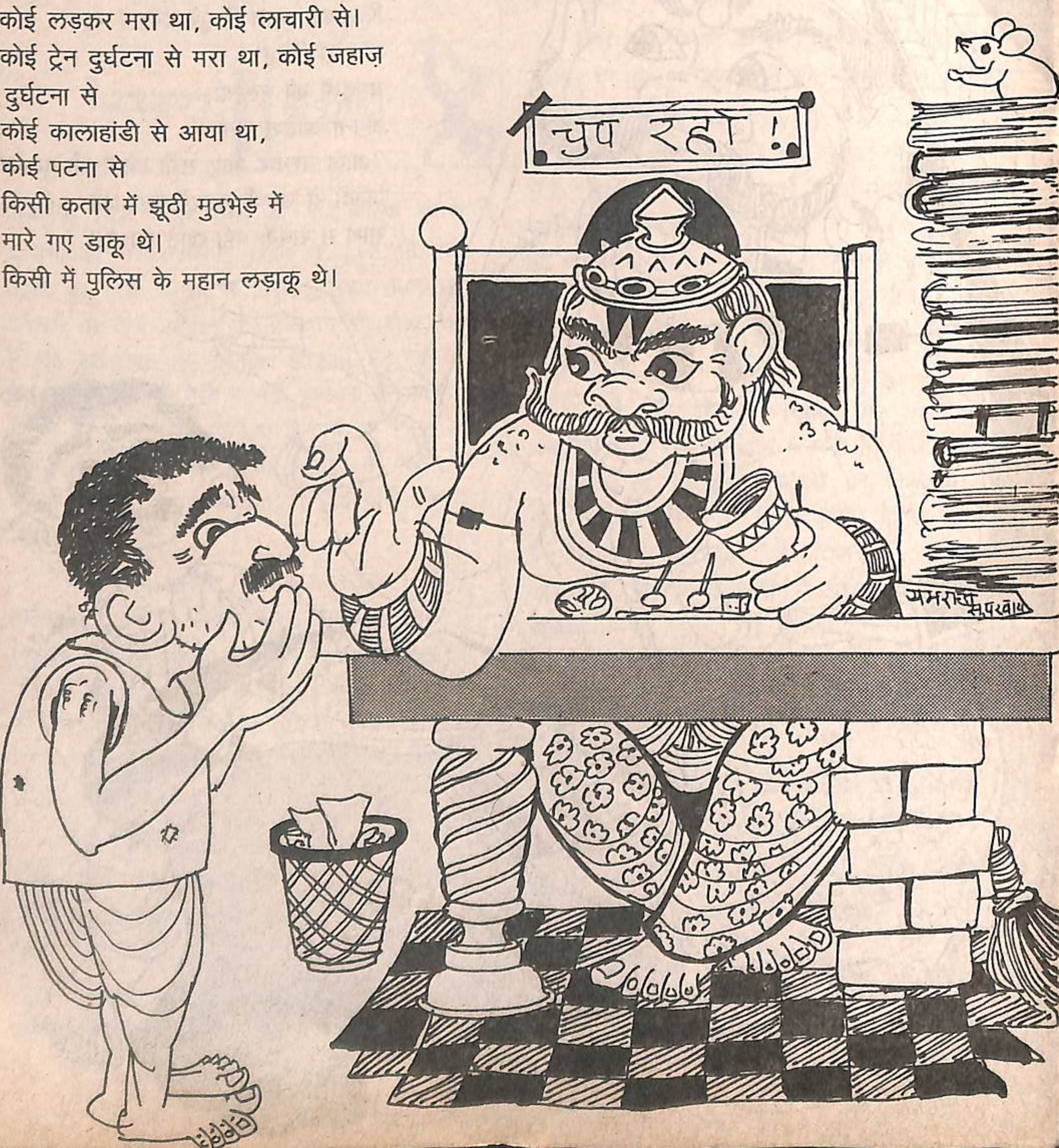

मंगलू को भी लाया गया
और आत्महत्या से मरने वालों की कतार में
खड़ा कराया गया।
पहले तो मंगलू की समझ में कुछ नहीं आया।
लेकिन सामने के साइन-बोर्ड पर,
''आत्म-हत्यारे'' लिखा देख वह चकराया।
उसने विरोध में मुंह खोला
हिम्मत के साथ भरे दरबार में बोला,
''हे महा मान्यवर यमराज!
आप तो कहे जाते हैं धर्मराज।
धरती पर जो भी मरता है,
आपके दरबार में न्याय की आशा करता है।
मैं तो एक ग़रीब पर सुखी इंसान था।
मेरी अपनी छोटी-सी झोपड़ी थी,
खेत-खलिहान था।
पड़ोस में हरा-भरा जंगल था,
जंगल में झरने थे, कल-कल बहता जल था।
लेकिन जब विकास की तेज़ हवा चली
चौड़ी-चौड़ी सड़कों में बदल गई
जंगल की गली।
पूरा जंगल इमारती लकड़ी हो गया,
हमारी झोपड़ी, खेत-खलिहान
सब लोहा-पत्थर की खदान में खो गया।
रोजी-रोटी के लिए मजबूर,
मुझे बनना पड़ा, ठेके की खदान में मज़दूर।
पहले हमसे लोहा-पत्थर खुदवाया गया,
बाद में बड़ी मशीनें मंगवाकर हमें हटाया गया।
मैं तो मजबूरी में छंटनी की ख़िलाफ लड़ रहा था,
शांतिपूर्वक हक़ के लिए आगे बढ़ रहा था,
मैंने आत्महत्या नहीं की है,
मैं तो पुलिस की गोली से मरा हूं।
लेकिन पता नहीं क्यों आपके दरबार में,
आत्महत्यारों की लाइन में खड़ा हूं।
आप अपने यमदूतों को समझाइए,
और मुझे न्याय मांगने वालों की कतार में
खड़ा कराइए।''

यमराज ने मंगलू का बही-खाता
उलट-पुलटकर देखा,
फिर कड़ककर बोले-
''तुम पार कर रहे हो अनुशासन की रेखा
जिस कतार में हो वहीं खड़े रहो,
और जो सजा मिले उसे सहो।
यह सच है कि तुम गोली से मरे हो
और गोली पुलिस ने चलाई थी।
लेकिन जिस बंदूक से गोली चलाई थी
वह तुम्हारे किसी मज़दूर साथी ने बनाई थी।
बंदूक का लोहा
इस्पात कारखाने में ढाला गया था,
जिसका कच्चा माल खदान से
तुम्हारी ही गैंती से तोड़कर निकाला गया था।
बड़ी मशीन का भी लोहा
तुम्हारी ही गैंती ने तोड़ा था,
मशीन के पुर्ज़ों को
तुम्हारे ही मज़दूर साथी ने जोड़ा था।
इसलिए तुम अपने ही कर्मों से पहले
बेरोज़गार हुए फिर मरे हो।
इसीलिए आत्महत्यारों की कतार में खड़े हो।''

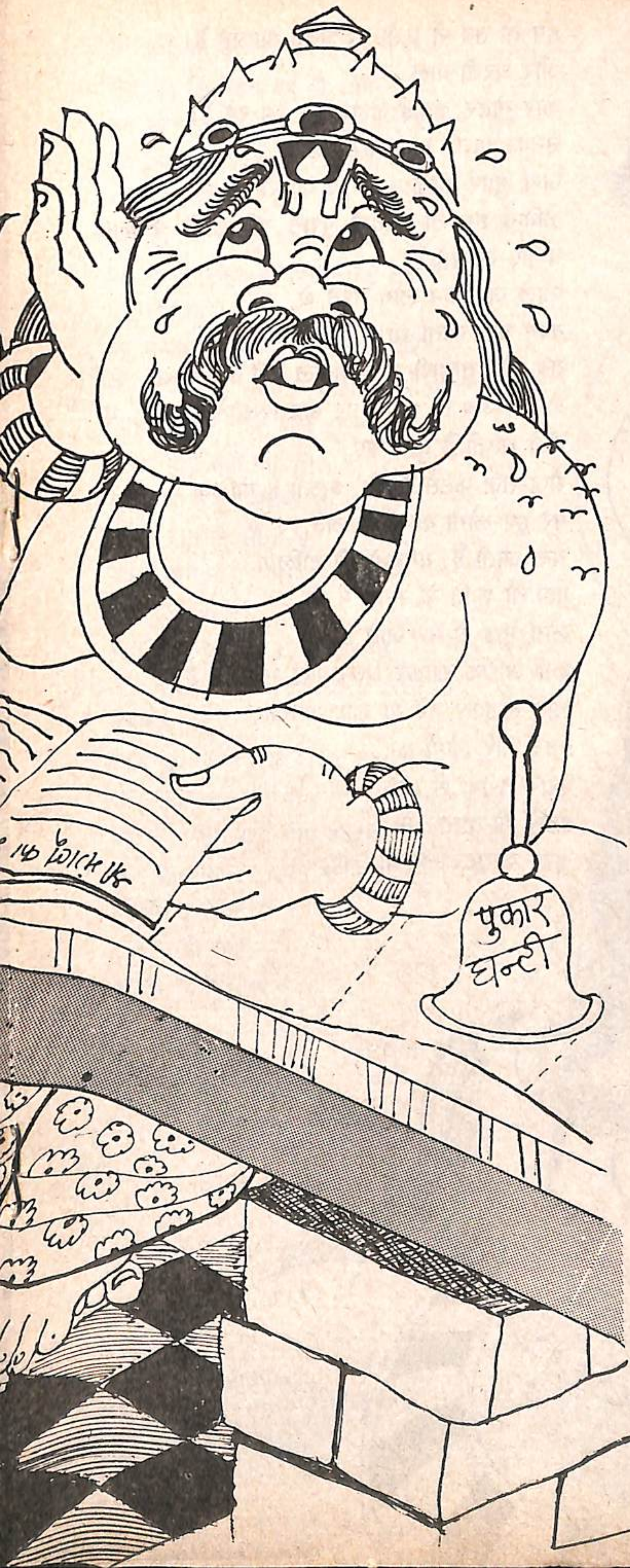

मंगलू गुस्साया,
उसने मुट्ठी बांधकर यमराज को धमकाया।
बोला-
''हमारे बच्चे भूख से मर रहे हैं,
और आप न्याय के साथ मज़ाक कर रहे हैं?
अरे ऐसा न्याय करोगे तो पछताओगे
यमराज हो तो क्या हुआ,
तुमको भी पड़ेंगे कीड़े, तुम भी नरक में जाओगे।''

मंगलू की बात से यमराज को चिंता हुई,
माथे पर आ गया पसीना।
बोले-
''धरती वालों ने हराम कर दिया है जीना।
कहने को तो हम यमलोक के राजा हैं,
सर्वोच्च-पद पर विराजमान हैं।
लेकिन सच तो यह है
कि हम ख़ुद परेशान हैं।
अरे! यह यमलोक तो मनुष्यों ने बनाया है,
स्वर्ग-नरक का क़िस्सा
उन्होंने ही सबके दिमाग़ में घुसाया है।
वरना यह तो पूरी माया है,
कोरी कल्पना है।
जो इसे नहीं मानते,
उन्हें यहां लाना सख़्त मना है।
जो इसे सच मानते हैं,
उन्हें ही मजबूरी में लाना पड़ता है,
और जल्द से जल्द
उनका मामला निपटाना पड़ता है।
तुम्हीं बताओ,
जब मनुष्यों ने यमलोक बनाया था,
हमें भैंसे पर बैठाया था,

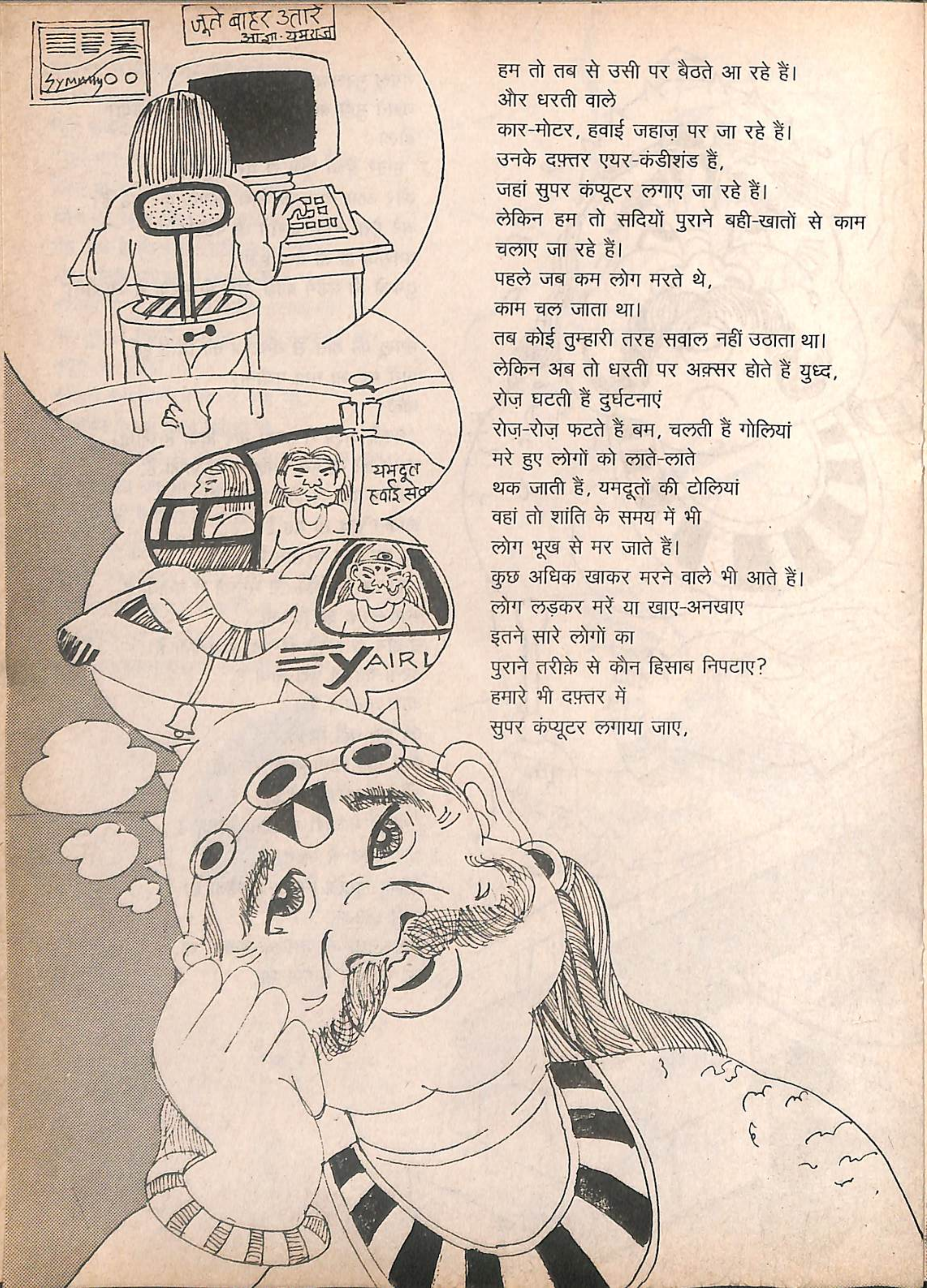

हम तो तब से उसी पर बैठते आ रहे हैं।
और धरती वाले
कार-मोटर, हवाई जहाज़ पर जा रहे हैं।
उनके दफ़्तर एयर-कंडीशंड हैं,
जहां सुपर कंप्यूटर लगाए जा रहे हैं।
लेकिन हम तो सदियों पुराने बही-खातों से काम चलाए जा रहे हैं।
पहले जब कम लोग मरते थे,
काम चल जाता था।
तब कोई तुम्हारी तरह सवाल नहीं उठाता था।
लेकिन अब तो धरती पर अक़्सर होते हैं युध्द,
रोज़ घटती हैं दुर्घटनाएं
रोज़-रोज़ फटते हैं बम, चलती हैं गोलियां
मरे हुए लोगों को लाते-लाते
थक जाती हैं, यमदूतों की टोलियां
वहां तो शांति के समय में भी
लोग भूख से मर जाते हैं।
कुछ अधिक खाकर मरने वाले भी आते हैं।
लोग लड़कर मरें या खाए-अनखाए
इतने सारे लोगों का
पुराने तरीक़े से कौन हिसाब निपटाए?
हमारे भी दफ़्तर में
सुपर कंप्यूटर लगाया जाए,

यमदूतों को हेलीकाप्टर दिलाया जाए,
भैंसे की डिज़ाइन का ही सही
हमें भी पर्सनल हवाई जहाज़ पर बैठाया जाए,
तब कोई मुझसे न्याय की बात कहे।
नहीं तो, जो कुछ यहां बीते, उसे सहे।
इसीलिए हे मंगलू भाई!
जो भी यमलोक के विचार को नकारेगा,
यह तय करेगा
कि मरकर स्वर्ग-नरक नहीं सिधारेगा,
न्याय के लिए धरती पर ही संघर्ष चलाएगा,
न्याय मांगेगा नहीं, उसे हथियाएगा,
सही न्याय वही पाएगा।
तुमने भी जिस संघर्ष-वृक्ष को
अपने ख़ून से सींचा है,
वह सूखने नहीं पाएगा
जब-जब चलेगी गोलियां,
उसे और खून से सींचा जाएगा।
और एक दिन जब हरी-हरी धरती के
क्षितिज पर,
सत्य का लाल-सुर्ख़ सूरज निकलेगा,
उस संघर्ष-वृक्ष में न्याय का सुंदर फूल खिलेगा।
उस दिन हम ख़ुद वहां आएंगे
और अन्याय की चोटी पर बैठे
धरती के ठेकेदारों से
तुम्हारा ही नहीं,
अपना भी हिसाब चुकाएंगे।

❑ श्याम बहादुर नम्र

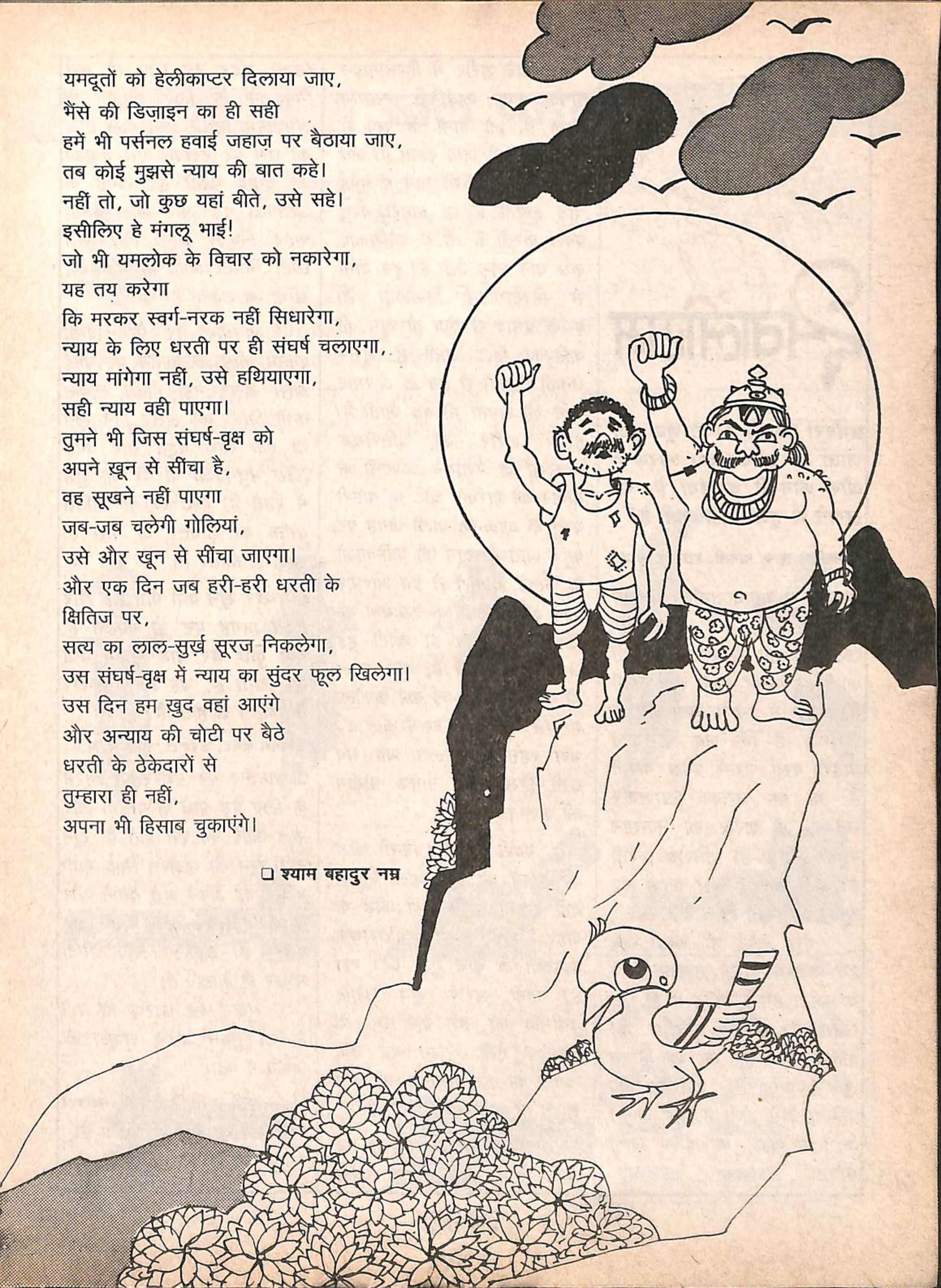

सवालीराम

■ भंवरी काटती है, तो सूज क्यों जाता है? इसका क्या कारण है और कौन-सी दवाईयां हैं, जो लगाने से सूजन नहीं आती है?

❑ साजिद खान, नामली, रतलाम, म.प्र.

❑ भंवरी से शायद तुम्हारा मतलब भौरें से है। बर्र, मधुमक्खी, खटमल आदि के काटने पर भी काटी हुई जगह थोड़ी सूज जाती है। असल में हमारी त्वचा की यह विशेषता है कि जब भी कोई बाहरी वस्तु उसमें प्रवेश करती है, तो वह उसका (ख़ासकर उनका, जो शरीर को नुकसान पहुंचा सकती हैं) प्रतिरोध करती है। इसी कारण उस जगह पर सूजन आ जाती है।

ऐसा कोई भी कीड़ा जब हमें काटता है तो उसका ज़हर या कांटा हमारे शरीर में ही छूट जाता है। इसके प्रतिरोध की प्रक्रिया में शरीर का वह हिस्सा सूज जाता है। प्रतिरोध की प्रक्रिया कैसे होती है, यह जानने के लिए थोड़ा गहराई में जाना पड़ेगा।

हमारे शरीर में हिस्टामाइन नामक एक कार्बनिक रसायन रहता है, जो दानों के रूप में कोशिकाओं में जमा रहता है। जब भी शरीर के किसी भाग में कोई चोट लगती है या बाहरी वस्तु प्रवेश करती है तो ये कोशिकाएं कुछ दाने छोड़ देती हैं। इन दानों से हिस्टामाइन निकलता है। इसके प्रभाव से एक तो खून की वाहिकाएं फैल जाती हैं, दूसरे उनकी दीवारों से द्रव के आरपार जाने की क्षमता भी बढ़ जाती है। इससे शरीर की प्रतिरोधक व्यवस्था के रसायन आसानी से दीवार को पारकर चोट या बाहरी वस्तु के आक्रमण वाली जगह पर पहुंच जाते हैं। खून की वाहिकाओं के फैलने, दीवारों से द्रव आरपार जाने और प्रतिरोधक रसायनों की क्रिया के कारण ही काटी हुई जगह सूज जाती है, और लाल भी पड़ जाती है। कई बार फफोला भी पड़ जाता है, जिसमें कोई द्रव भरा रहता है। मूलतः यह सब उसी हिस्टामाइन नामक प्रोटीन की करामात है।

भंवरी या अन्य किसी कीड़े के क़ाटने पर होने वाली सूजन यही बताती है कि वहां कीड़े के ज़हर और हमारी प्रतिरोधक व्यवस्था के बीच युद्ध चल रहा है। यानी शरीर खुद उसके दुष्प्रभाव को नष्ट कर रहा है। इसलिए ऐसी सूजन पर दवा लगाने का कोई मतलब नहीं। यह सूजन तो फ़ायदे के लिए ही है।

अगर कभी भंवरी या बर्र आदि काटे और उसका कांटा (डंक) अंदर रह जाए तो उसे निकालने के लिए अंगूठी या अंगूठीनुमा किसी अन्य गोल चीज़ को उस पर रखकर ऐसे दबाओ की दबाव काटी हुई जगह के आसपास पड़े और कांटा थोड़ा बाहर निकल आए। फिर उसे छोटी चिमटी आदि से पकड़कर खींचा जा सकता है।

आमतौर पर ऐसे किसी एकाध कीड़े के काटने पर कोई ख़ास असर नहीं होता। लेकिन कभी किसी को असर होने लगे या एक साथ बहुत सारे कीड़े (जैसे मधुमक्खी या बर्र जो झुंड में रहते हैं) काट लें, तो पीड़ित व्यक्ति को डॉक्टर के पास ले जाना ही बेहतर है।

■ मच्छर खून क्यों पीते हैं? और जिस जगह पर वो काटते हैं, वहां कुछ देर बाद सूजन क्यों आ जाती है, यह किस मच्छर के काटने से होता है?

❑ उमेश कचेर, करकटी, शहडोल, म.प्र.

❑ आमतौर पर मच्छर पेट भरने के लिए पेड़ पौधे से पत्तियों और फल आदि का रस पीते हैं, खून नहीं। खून की ज़रूरत सिर्फ़ मादा मच्छर को अपने अंडे बनाने और उनके विकास के लिए प्रोटीन हेतु पड़ती है। इसलिए सिर्फ़ मादा मच्छर ही काटती है।

सूजन का कारण तो वही है जो तुमने पहले सवाल के जबाव में पढ़ा।

सभी प्रजातियों के मच्छरों के काटने पर ऐसा हो सकता है।

❑❑❑

खेल पहेली

यह आकृति सात टुकड़ों से मिलकर बनी है। यहां दी गई अन्य आकृतियां भी इन्हीं टुकड़ों से मिलकर बनी हैं। हर आकृति में सातों टुकड़ों का उपयोग हुआ है।

ये सात टुकड़े गत्ते से बनाए जा सकते हैं। एक मोटा गत्ता लो। उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। वर्ग को 16 बराबर हिस्सों में बांट दो! हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)

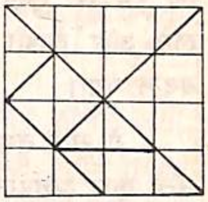

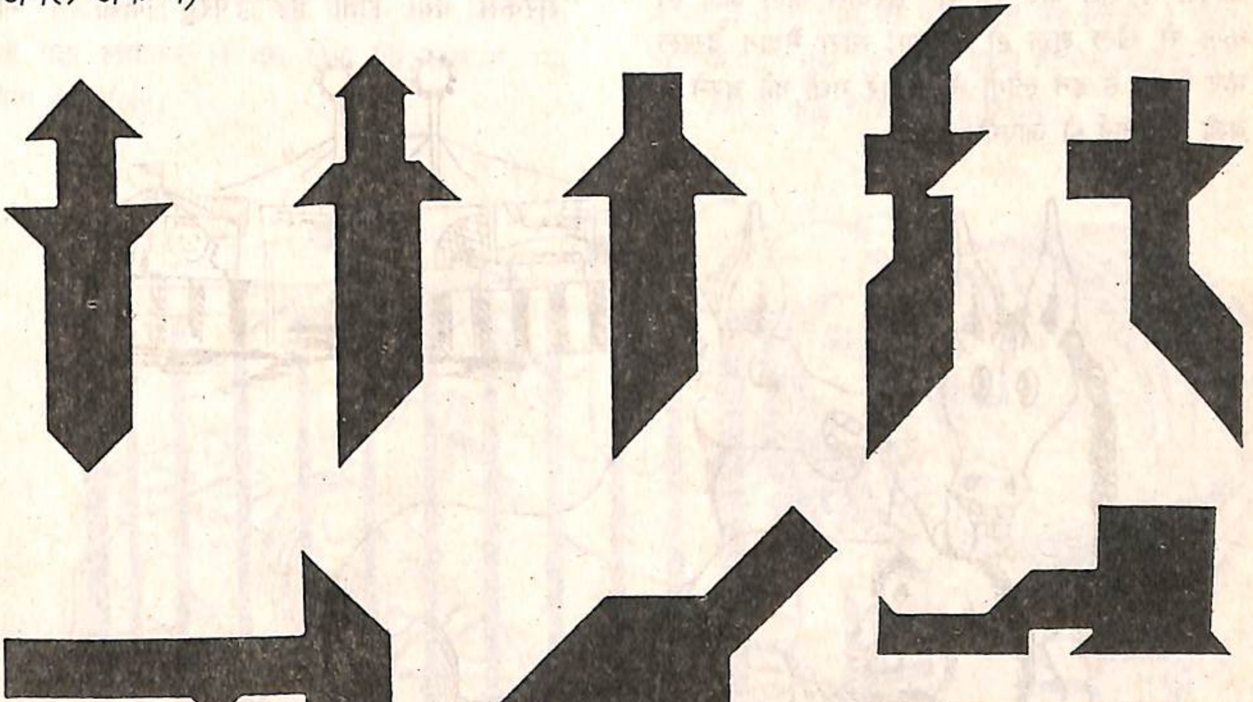

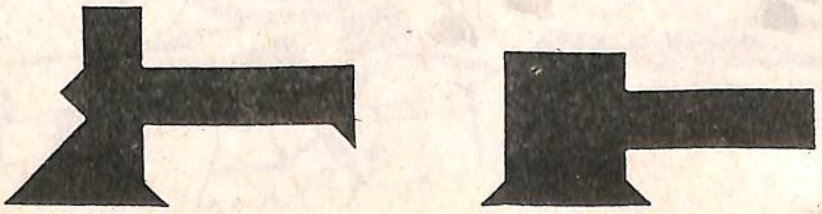

हल जून, 93 अंक के

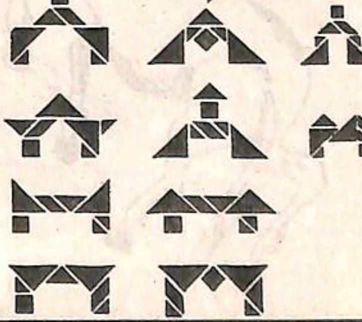

नटखट गधा

रोज़ की तरह उस दिन भी सुबह-सुबह धोबी-घाट पर गधे जमा हुए। लेकिन उस दिन उन लोगों ने कुछ नई चीज़ें देखीं। जिस लंबे-चौड़े मैदान में वे बिना रोकटोक घूमते चरते थे, वहां चारों ओर सफ़ाई हो रही थी। ट्रकों पर सामान लाद-लादकर पहुंचाए जा रहे थे। कुछ देर बाद तंबू शामियाने खड़े होने लगे और देखते ही देखते सारे मैदान का नक़्शा बदल गया।

ये सारे तमाशे देखकर गधों के कान खड़े हुए। उन्हें कुछ अचरज हुआ और कुछ भय भी। धीरे-धीरे वे अपने धोबियों के निकट जमा हो गए। धोबी आपस में बातें कर रहे थे- सरकस वाले आए हैं। कल से खेल शुरू हो जाएगा। सारा मैदान दख़ल कर लिया है इन लोगों ने। बेचारे गधों को चरने में बड़ी कठिनाई हो जाएगी।

गधों ने धोबियों की बातें सुनी परंतु किसी ने कुछ कहा नहीं।

उन गधों में से एक गधा बड़ा नटखट था। वह सभी गधों को तंग किया करता था। दिन भर वह पूरे मैदान की दौड़ लगाया करता। बेमौके रेंकता फिरता और बिना कारण किसी पर दुलत्ती झाड़ देता। उसका धोबी भी उससे तंग आ गया था। धोबी डंडे से नटखट गधे की ख़ूब मरम्मत करता परंतु उस की आदत ज़रा भी नहीं सुधरती। उसका नाम भी नटखट ही पड़ गया था।

उस दिन नटखट ने सभी से बारी-बारी पूछा, "सरकस क्या होता है?" परंतु किसी ने भी

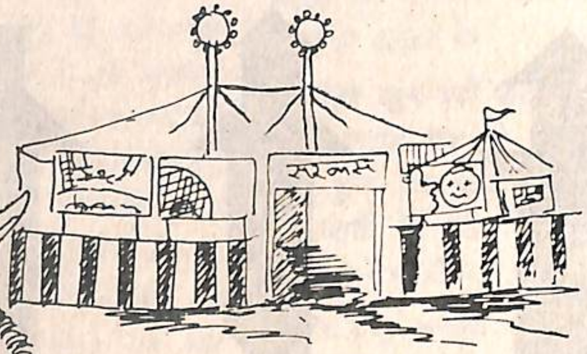

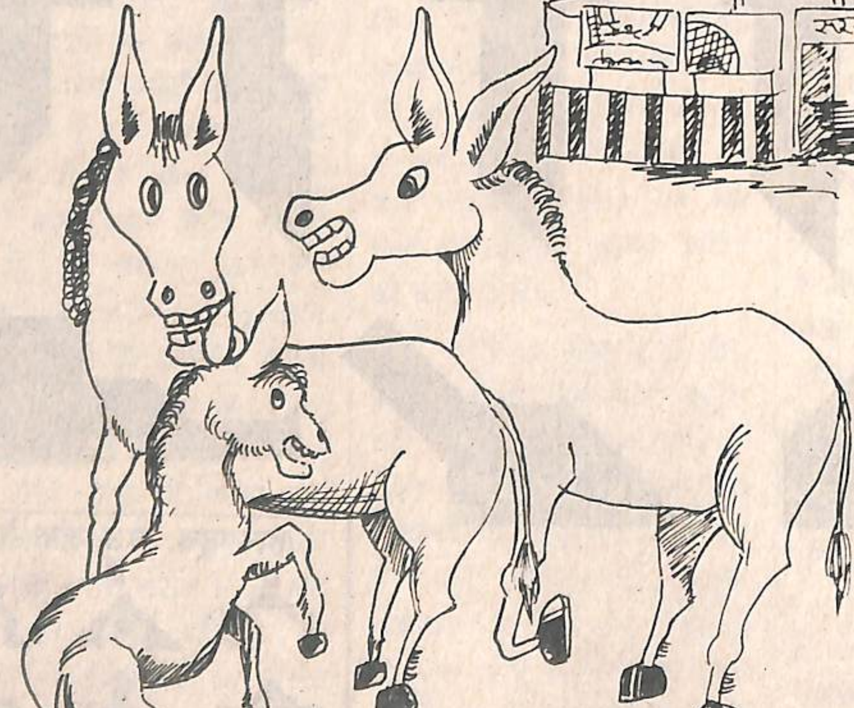

सही उत्तर नहीं दिया। अंत में वह बूढ़े गधे के पास पहुंचा और बोला, ''दादा, सरकस क्या होता है?''

''मुझे नहीं मालूम बेटे! आज के ज़माने में रोज़ नई-नई चीज़ें निकलती रहती हैं। किस-किस की ख़बर रखी जाए?''

बूढ़ा गधा इतना कहकर फिर चलने लगा परंतु नटखट की जिज्ञासा शांत नहीं हुई।

नटखट को दूसरे गधों पर बड़ा गुस्सा आया। वह बड़बड़ाने लगा, 'गधे देश-दुनिया की कोई ख़बर नहीं रखते और इसीलिए तो गधे कहे जाते हैं। जिसके जी में आता है दो-चार डंडे जमा देता है और ये हैं कि देह-हाथ झाड़कर फिर तैयार हो जाते हैं। इतने बड़े हो गए और आज तक यह भी नहीं मालूम कि सरकस क्या होता है।'

नटखट ने मन ही मन यह निश्चय किया कि वह पता लगाकर ही दम लेगा कि सरकस क्या होता है आख़िर।

चरने के बहाने वह उस स्थान पर पहुंच गया जहां कुछ लोग बड़ी मुस्तैदी से अपने कामों पर जुटे थे। वहां उसने बड़े-बड़े पिजड़े देखे। पिंजड़ों में छोटे-बड़े कई जंगली जानवर थे। बक्सों में सामान भरे थे। लकड़ी की तरह-तरह की चीज़ें बिखरी पड़ी थीं। इन सबको देखते-देखते नटखट बहुत क़रीब पहुंच गया। तभी किसी की नज़र उस पर गई। वह डंडा लेकर नटखट पर टूट पड़ा। अगर नटखट बड़ी तेज़ी से न भाग जाता तो उसकी हड्डी पसली एक हो जाती।

नटखट को बड़ा दुख हुआ। वह सोचने लगा, 'मैंने उनका कोई नुकसान नहीं किया, कुछ चुराया नहीं फिर भी मुझे क्यों खदेड़ दिया गया। क्या गधों को तमाशा देखने का हक नहीं है? वहां आदमी के भी बहुत बच्चे जमा थे परंतु उन पर किसी ने डंडा नहीं चलाया। मुझ पर नज़र पड़ते ही ऐसे डंडे घुमाने लगे जैसे मैं कोई चोर लफंगा होऊं।'

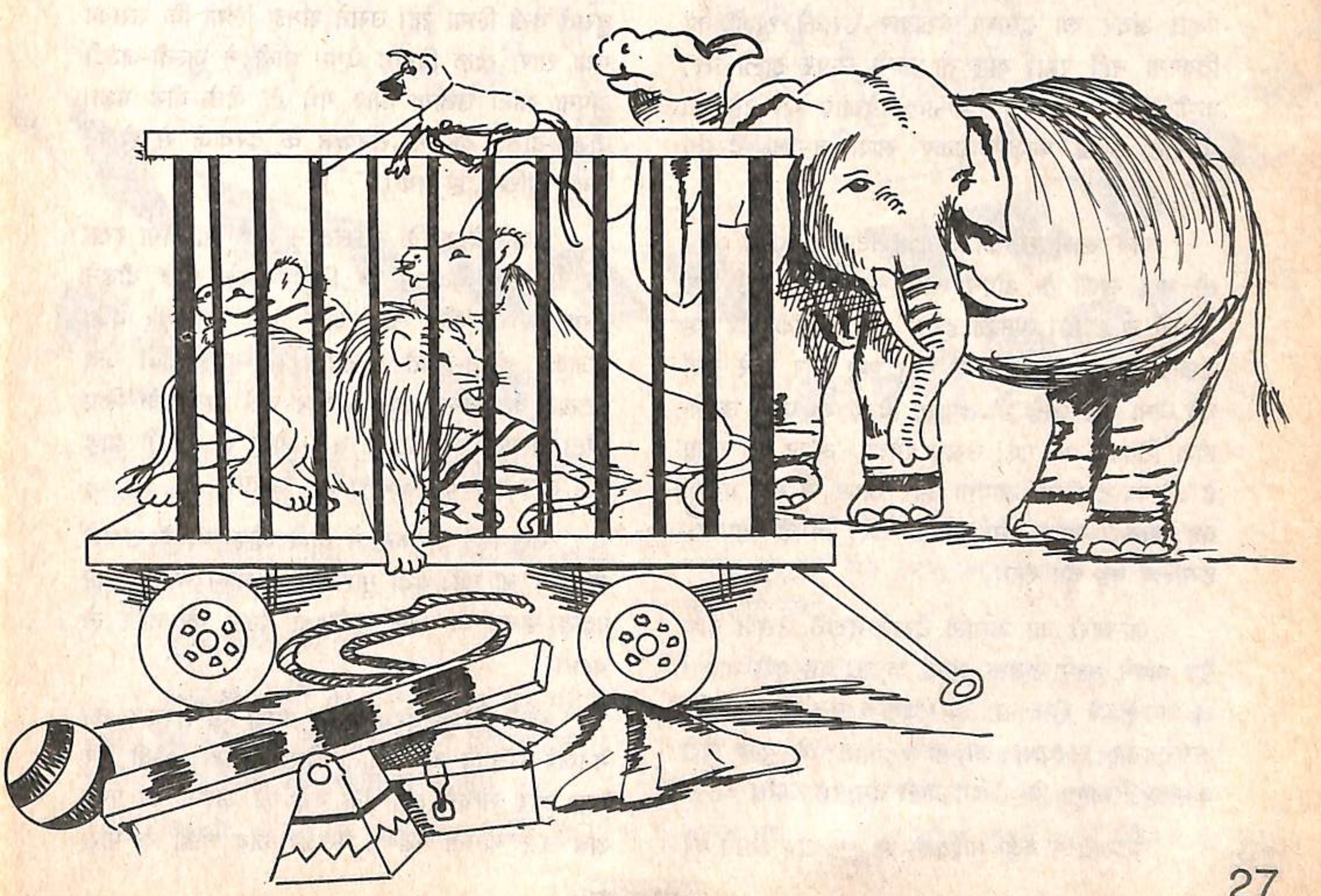

यही सोचते-सोचते नटखट धोबी घाट चला आया। उस समय सारे धोबी घर लौटने की तैयारी कर रहे थे। नटखट भी पीठ पर कपड़ों का गट्ठर लादकर अपने मालिक के घर लौट आया।

सारी रात नटखट को नींद नहीं आई। वह यह जानने के लिए बेचैन था कि सरकस क्या होता है? करवट बदलते-बदलते सुबह हुई और वह अपने मालिक के साथ फिर घाट पहुंच गया। वहां उसने देखा कि सारे बिखरे सामान सजा दिए गए हैं। लकड़ी और पर्दे से चारों ओर घेरा डाल दिया गया है। सारा मैदान बिल्कुल निखर उठा है।

दिन चढ़ते-चढ़ते लोगों का आना-जाना शुरू हो गया। बड़े शामियाने के भीतर बाजे बजने लगे। भीतर कुछ परछाइयां घूमती-फिरती नज़र आने लगीं।

नटखट धीरे-धीरे शामियाने के निकट पहुंच गया और एक छेद से अंदर झांकने लगा।

वाह-वाह। वाह-वाह! मन ही मन वह उछल पड़ा। अंदर का तमाशा देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वहां तो कभी ऊपर झूलों पर, कभी नीचे ज़मीन पर कमाल दिखाए जा रहे थे। नटखट आंखें फाड़-फाड़कर सारा तमाशा देखता रहा।

जब जानवरों का तमाशा दिखाया जाने लगा तो मारे खुशी के अपने आप नटखट ने कई बार दुलत्ती झाड़ दी। उसकी इच्छा हुई कि एक बार वह उछल-उछलकर खुशी के गीत गाए और सारे गधों को जमा कर उन्हें भी तमाशा दिखा दे। परंतु उसके होश ठिकाने आ गए। उसने सोचा, 'अगर वह गाता है तो पकड़ लिया जाएगा और ऊपर से मार पड़ेगी वह अलग। सारा बना बनाया खेल बिगड़ जाएगा।' इसलिए वह चुप रहा।

जानवरों का कमाल देखते-देखते उसके हाथ पैर अपने आप फड़क जाया करते। वह पूरी ताक़त से अपने को रोक रहा था। उसके मन में आया कि अगर वह सरकस का गधा होता तो कुछ ऐसे कमाल दिखाता कि देखने वाले दंग रह जाते।

नटखट ने बड़ी मुश्किल से कुछ देर अपने को रोका पर बहुत अधिक देर वह ऐसा नहीं कर सका। उसे एक उपाय सूझ गया और उपाय सूझते ही वह चींपू-चींपू गा उठा। इतना ही नहीं वह रेंकते-रेंकते तेजी से दौड़ने लगा और बात की बात में सरकस के दरवाज़े से होकर अंदर चला गया। दरबान हक्के-बक्के देखते रह गए।

जब नटखट सरकस के भीतर पहुंचा तब तक जानवरों का खेल ख़त्म हो चुका था। सभी जानवर चले गए थे और दूसरे खेल के लिए मंच ख़ाली कर दिया गया था। नटखट ने मंच पर उसी तरह गोलाकार घूमना शुरू किया जिस तरह घोड़ों को दौड़ते देखा था। तमाशा देखने वाले लड़के तालियां बजा-बजाकर हंसने लगे। पहरेदारों ने उसे निकालने की कोशिश की पर नटखट ने उन पर ऐसी दुलत्ती झाड़ी कि उसके निकट जाने की हिम्मत नहीं हुई किसी की। एक जोकर की तो नाक टूटते-टूटते बची। बेचारा चारों खाने चित्त होकर रह गया। उधर घाट से धोबी ने अपने गधे को रेंकते-रेंकते सरकस में घुसते देख लिया था। उसने समझ लिया कि उसका गधा सारा खेल बिगाड़ देगा। धोबी ने जल्दी-जल्दी अपना सोंटा उठाया और गधे के पीछे दौड़ पड़ा। दौड़ते-दौड़ते वह भी सरकस के दरवाज़े से होकर अंदर दाखिल हो गया।

उसने देखा कि नटखट ने ख़ूब रंग जमा रखा है। वह उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ने लगा। बच्चे और ज़ोर-ज़ोर की तालियां बजा बजाकर हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। धोबी जब नटखट के निकट पहुंचता और उसे मारने के लिए सोंटा चलाता तो नटखट बड़े ज़ोरों से दुलत्ती झाड़ देता और हंसी का फब्बारा छूट पड़ता।

उस दिन सरकस में धोबी और गधे के तमाशे से जान आ गई। बड़ी मुश्किल से धोबी नटखट को पकड़ पाया। वह उसे घसीटता बाहर की ओर ले चला।

जैसे ही वह दरवाज़े पर आया कि सरकस का मैनेजर उसकी ओर आता दिखाई पड़ा। धोबी डर गया और सोचने लगा कि गधे की करनी का फल अब उसे भोगना पड़ेगा। मैनेजर जब धोबी के पास

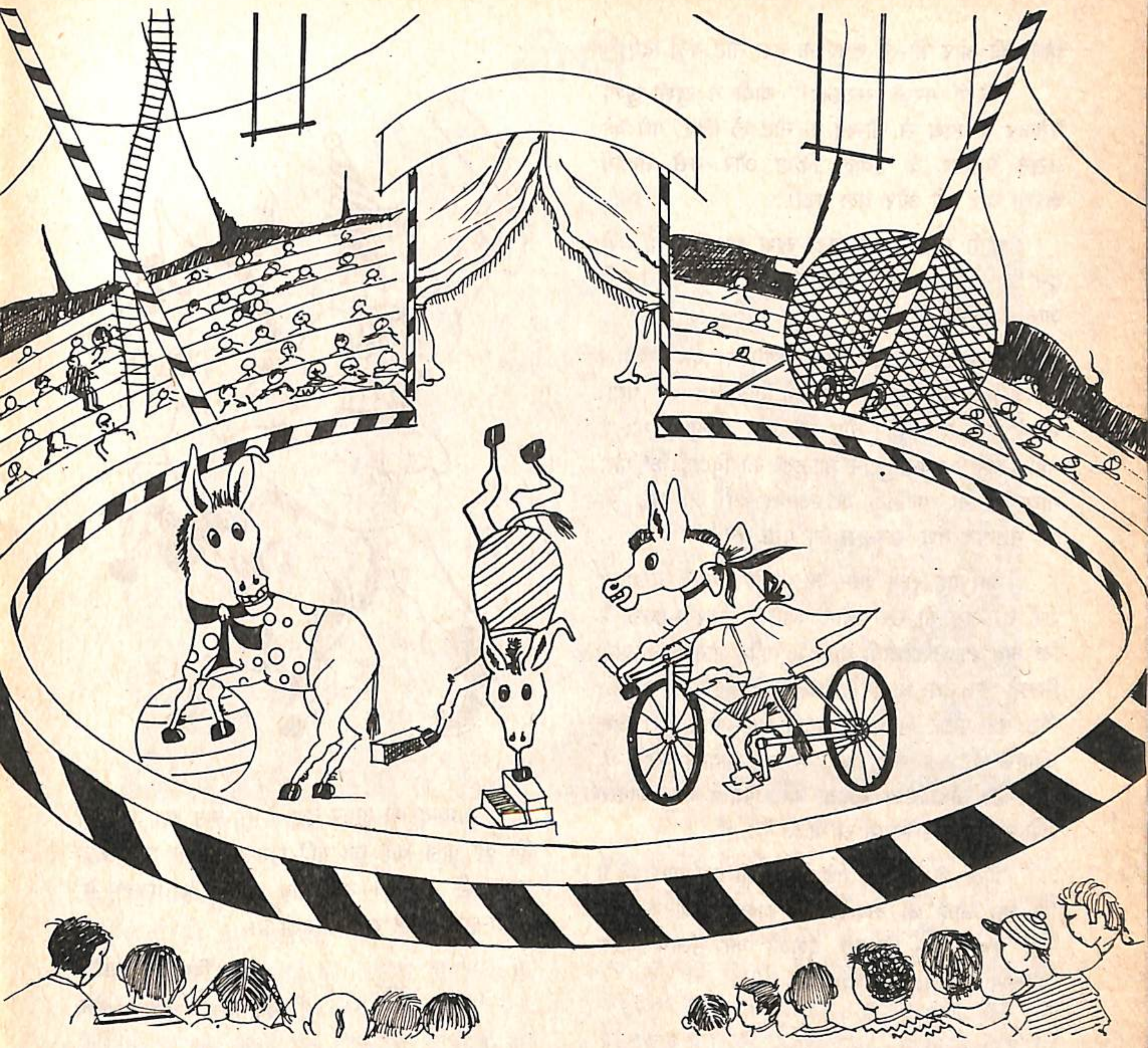

आया तो धोबी ने झुक-झुककर उसे सलाम बजाया। मैंनेजर बोला, ''क्यों जी, गधा बेचोगे?''

धोबी बोला, "गधा बेच दूंगा तो मेरे कपड़े कौन ढोएगा सरकार!"

''दूसरा ख़रीद लेना।''

''आजकल गधों की क़ीमत बहुत बढ़ गई है हुजूर! इसे बेच दूंगा तो फिर ख़रीद नहीं पाऊंगा।'' धोबी ने दांत निपोरकर अपनी बात कही।

''कितनी क़ीमत है आजकल गधों की?'' मैनेजर ने पूछा

''पांच सौ से कम में कोई गधावाला बात नहीं करता हुजूर!'' यह कहते-कहते धोबी अपना माथा खुजलाने लगा।

मैनेजर बोला, ''देखो, तुम्हारा यह गधा मेरे सरकस में रहने लायक है। यह लो हज़ार रुपए और एक के बदले तुम अपने काम के लिए दो गधे ख़रीद लो। हम इस गधे को अच्छी तालीम देंगे और अच्छा गधा बनाएंगे।'' इतना कहते-कहते मैनेजर ने

धोबी की ओर सौ-सौ रुपए के दस नोट बढ़ा दिए।

"जैसी मरजी सरकार!" धोबी ने खुशी-खुशी मैनेजर के हाथ से सौ-सौ के नोट ले लिए, गधे को उसने मैनेजर के हवाले किया और उसे सलाम करता घाट की ओर चल पड़ा।

धोबी मन ही मन बड़ा खुश था। एक तो उसे दूना दाम मिला और दूसरे नटखट गधे से उसकी जान बची थी।

नटखट को भी मुंहमांगा मिला। वह सरकस का गधा बनना चाहता था सो अब वह बन गया। उसने एक बार चींपू-चींपू का राग अलापा। मालूम नहीं, उसने अपने पुराने मालिक की विदाई का गीत गाया या नए मालिक के स्वागत का। जो कुछ भी हो, नटखट गधा सरकस का गधा बन गया।

अब वह रोज़ शाम को अपने कमाल दिखाता। डंडे तो अब भी उसे खाने पड़ते हैं। फ़रक इतना है कि अब तो उसे धोबी के डंडे नहीं, जोकरों के डंडे मिलते हैं। तब धोबी के डंडे बड़े ज़ोर से उसकी पीठ पर पड़ते थे पर आवाज़ कम होती थी। अब जोकरों के डंडे धीरे पड़ते हैं पर आवाज़ ज़ोर की होती है। धोबी जब चाहता था, पीटता था, जोकर उसे समय और नियम से पीटते हैं।

फिर भी नटखट गधे को खुशी इस बात की है कि वह धोबी के कपड़े ढोने वाला साधारण गधा नहीं रहा वरन् हज़ारों दर्शकों को हंसाने वाला सरकस का गधा बन गया है।

नटखट को अगर दुख है तो बस इस बात का कि वह जहां चाहे जा नहीं सकता, जैसी घास चाहे चर नहीं सकता। उसे तंबू में रहना पड़ता है, रूखी-सूखी घास खानी पड़ती है।

❑ **विष्णुकांत पांडेय**

सभी चित्र : सुशील लांडगे

लीची

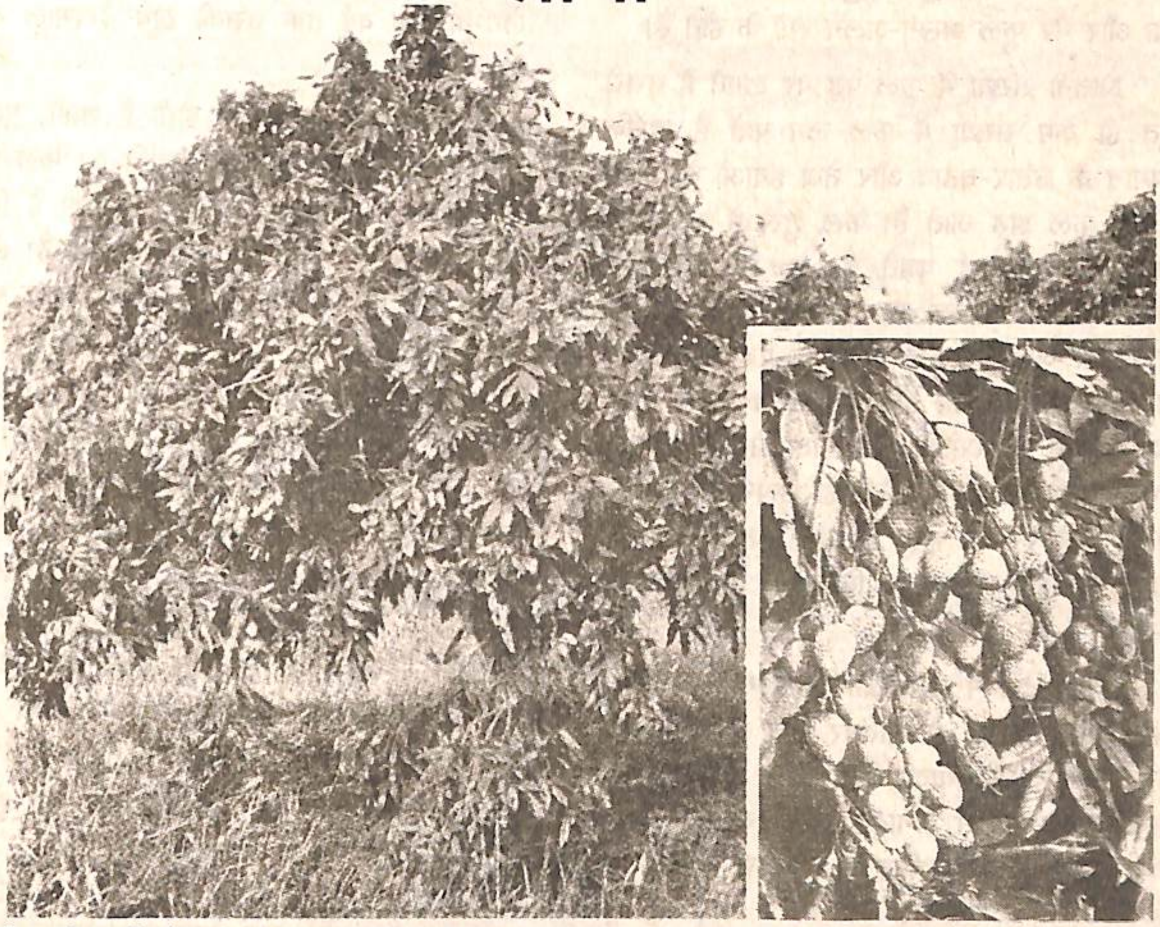

अभी-अभी गर्मी से राहत महसूस की होगी तुमने। इस गर्म मौसम में बाज़ार में बढ़िया फलों की भरमार होती है। मई-जून में ही लीची भी पककर बाज़ार में आ जाती है। मूल रूप से चीन से लाकर लीची हमारे देश में लगाई गई थी। इसका नाम 'ली-ची' चीनी भाषा का ही शब्द है। जिन दिनों चीन से बौद्ध यात्रियों का यहां आना शुरू हुआ तभी से लीची यहां लगाई जाने लगी। बिहार में और ख़ासकर उस समय के वैशाली राज्य में बौद्ध यात्रियों का आना बहुत बड़ी संख्या में होता था। वहीं बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर की लीची अब तक हिंदुस्तान में पैदा हुई लीचियों में सबसे बढ़िया मानी जाती है। वैसे हमारे देश में लीची की खेती कई जगह बड़े पैमाने पर होती है। जैसे उ.प्र. के देहरादून में, बंगाल में हुगली के आसपास, पंजाब में गुरूदासपुर ज़िले में और दक्षिण में नीलगिरि पर्वत के नीचे भी लीची की खेती होती है।

लीची के पेड़ मध्यम से लेकर बड़े आकार तक के होते हैं। पेड़ ढेर सारी शाखाओं वाला और छतरीनुमा आकृति वाला होता है। सुंदर और हमेशा हरा रहने वाला लीची का पेड़ दस मीटर की ऊंचाई तक भी बढ़ सकता है। पतझड़ में भी इसके सारे पत्ते एक साथ नहीं झड़ते। यह पेड़ घनी छांव देता है। इसके पत्तों की ऊपरी सतह चमकदार गहरे हरे रंग की होती है और निचली सतह पर भूरापन लिए हरा रंग होता है। पत्ते डंठल के दोनों ओर लगे होते हैं। पेड़ की छाल खुरदुरी और भूरे रंग की होती है।

इसके फूलों को भी आम के फूलों की तरह 'मंजर' कहते हैं क्योंकि ये भी गुच्छों में लगते हैं। लीची के पेड़ पर फूल आने का समय उस जगह के पर्यावरण की स्थिति पर निर्भर करता है। उत्तरी गोलार्द्ध में जिन देशों में लीची होती है, उनमें फूल आने का समय नवंबर से फ़रवरी तक होता है। इसी तरह दक्षिणी गोलार्द्ध में जून से सितंबर तक।

आमतौर से पेड़ लगाने के तीन से पांच वर्ष बाद फूल आने लगते हैं। फूल बहुत छोटे होते हैं और मादा और नर फूल अलग-अलग रंगों के होते हैं।

जितनी संख्या में फूल पेड़ पर लगते हैं उससे बहुत ही कम संख्या में फल लग पाते हैं क्योंकि तापमान के उतार-चढ़ाव और तेज़ हवाओं के चलने से कई फूल झड़ जाते हैं। फल शुरू में छोटे-छोटे, सरसों जैसे दिखाई पड़ते हैं, एक-एक टहनी में दर्जनों। धीरे-धीरे फल बढ़कर कबूतर के अंडे के बराबर हो जाते हैं। फल के ऊपर एक थोड़ा कड़ा और खुरदुरा छिलका होता है। उसके अंदर सफ़ेद गूदा होता है जो रसीला और मीठा होता है। गूदे के बीच में बड़ी सी गुठली होती है। ऊपर का खुरदुरा छिलका हरे रंग का होता है। फल पकने पर इसका रंग लाल-पीली सी झलक लिए हरा दिखाई पड़ता है।

हमारे देश में लीची का पेड़ लगाने का सबसे सही समय अगस्त से सितंबर तक होता है। ऐसा मौसम जो न तो ज़्यादा गीला हो न ज़्यादा सूखा। आमतौर पर कलम लगाकर लीची का पेड़ तैयार किया जाता है। वैसे बीज से भी इसे लगाया जा सकता है। कलम से लगाए गए पेड़ जल्दी फल देने लगते हैं- चार से पांच वर्षों में। पेड़ लगाने के बाद लगभग एक वर्ष तक उसकी ख़ूब देखभाल करनी पड़ती है।

लीची कई क़िस्म की होती है शाही, गुलाबी, चाइना आदि। इनमें से शाही प्रजाति का फल सबसे मीठा होता है। एक प्रकार ऐसा भी होता है जिसमें गुठली होती ही नहीं। इसे बेदाना कहते हैं। लेकिन बाज़ार में मुज़फ़्फ़रपुर की लीची ही ज़्यादा मशहूर है।

फल के अलावा इस पेड़ की छाल, जड़ और फूल भी कई दवाओं के रूप में काम आते हैं। छाल या जड़ को पानी में उबालकर उस पानी से कुल्ला करने पर गले का दर्द ख़त्म हो जाता है। फल के कारण ही यह पेड़ लगाया जाता है। फलों से होने वाली आय ही इस पेड़ का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग है। चीन में लीची को सुखाकर रखते हैं और फिर उसे लंबे समय तक खाया जाता है। लीची से ही कई तरह के सुगंधित पेय भी तैयार किए जाते हैं।

लेकिन लीची का पेड़ सदाबहार होते हुए भी फल कुछ ही हफ़्तों के मेहमान होते हैं।

❑❑.❑

माथापच्ची हल : जून, 93 अंक के

1. वास्तव में दिया हुआ चित्र एक जादुई वर्ग का है। इसमें 0=1 है और T =2 है। वर्ग की हर पंक्ति आड़ी, तिरछी या खड़ी जोड़ने पर योग 9 आता है। नवां खाना इसी हिसाब से चुना जाएगा।

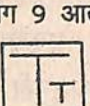

2. सिर अधिक लंबा रास्ता तय करेगा।
6. चार वर्ष से कुछ अधिक। सबसे अंत में वही बाल गिरेगा जो सबसे नया होगा, अर्थात जिसकी उम्र एक दिन है। अब उसके गिरने की बारी कब आएगी यह देखते हैं। पहले महिने में 150000 बालों में से 3000 बाल गिर जाएंगे। दो महिनों में 6000 और एक साल के भीतर (12×3=36000) 36 हज़ार बाल गिर जाएंगे। इस तरह जब तक उस बाल की गिरने की बारी आएगी चार वर्ष से ज़्यादा समय बीत जाएगा। अतः आदमी के सिर के बाल की औसत उम्र लगभग चार वर्ष होगी।
7. दोनों का वज़न बराबर होगा।
8. चार कंचे निकालने पड़ेंगे। पहले तीन निकाले गए कंचों का रंग अलग-अलग हो सकता है लेकिन चौथा ज़रूर पहले में किसी एक कंचे के रंग का होगा।
9.

वर्ग पहेली-24 का हल

1 क	■	2 म	क	3 र	■	4 ज	5 मा	त
6 स	ह	ज़ा	■	7 जा	र	■	ही	■
सी	■	क	■	मं	■	8 ह	ल	9 क
■	10 चां	■	11 अ	द	12 द	■	■	हा
13 अ	द	र	क	■	14 बा	पं	15 ब	र
र	■	■	16 प	17 म	ना	■	ई	■
18 बी	19 ह	ड़	■	हा	■	20 स	■	21 प
■	न	■	22 ता	व	■	23 ह	की	म
24 ख	न	क	■	25 त	री	न	■	क

वर्ग पहेली-24 का एक भी सर्वशुद्ध हल प्राप्त नहीं हुआ है।

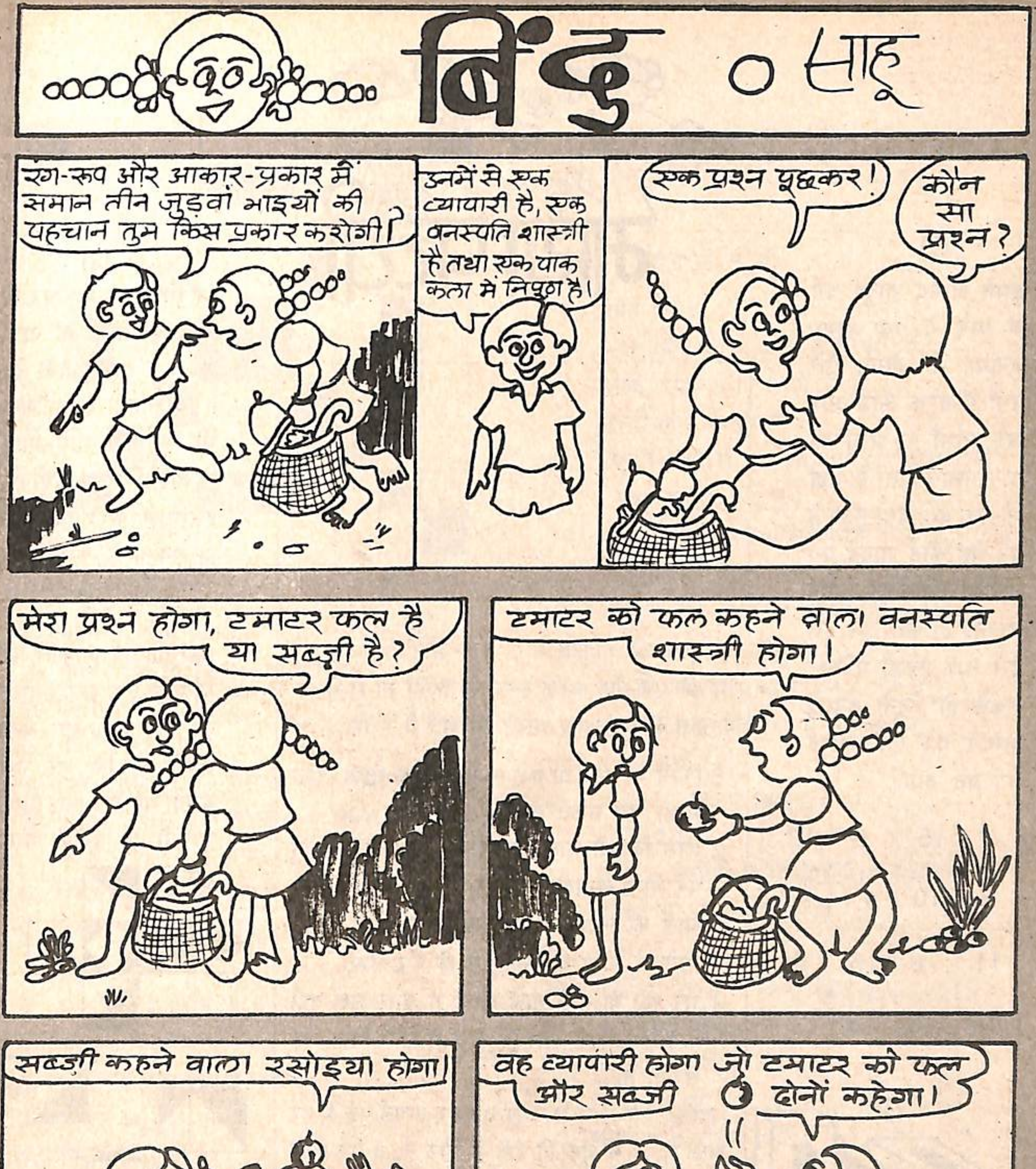
बिंदु
साहू
रंग-रूप और आकार-प्रकार में समान तीन जुड़वां भाइयों की पहचान तुम किस प्रकार करोगी।
उनमें से एक व्यापारी है, एक वनस्पति शास्त्री है तथा एक पाक कला में निपुण है।
एक प्रश्न पूछकर!
कौन सा प्रश्न?
मेरा प्रश्न होगा, टमाटर फल है या सब्ज़ी है?
टमाटर को फल कहने वाला वनस्पति शास्त्री होगा।
सब्ज़ी कहने वाला रसोइया होगा।
वह व्यापारी होगा जो टमाटर को फल और सब्जी दोनों कहेगा।

माथापच्ची

(1)

तुमने शायद जादुई वर्ग के बारे में पढ़ा होगा, बनाया भी होगा। ऐसे वर्गों में हरेक आड़े और खड़े स्तंभों के अंकों का योग समान होता है। यहां भी एक वर्ग दिया हुआ है पर यह कोई जादुई वर्ग नहीं है। लेकिन इसे जादुई बनाना है। क्या तुम इसे ऐसे चार टुकड़ों में काट सकते हो जिन्हें दुबारा जमाने पर एक जादुई वर्ग बन जाए?

1	15	5	12
8	10	4	9
11	6	16	2
14	3	13	7

(2)

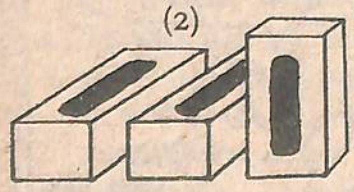

रज्जो के पास तीन ईंट हैं। हरेक की लंबाई 10 सें.मी., चौड़ाई 5 सें.मी. और ऊंचाई 2.5 सें.मी. है। रज्जो इनको एक के ऊपर एक रखकर अलग-अलग आकार बना रही है। क्या तुम बता सकते हो कि इन तीन ईंटों से अलग-अलग ऊंचाईयों के कितने आकार बनाए जा सकते हैं?

(3)

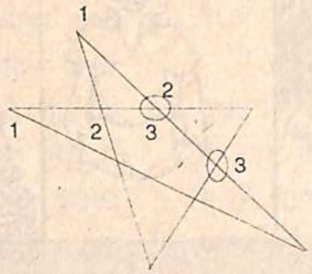

इस तारे की आकृति में 5 कोने और 5 कट (X) हैं। हमें एक-एक करके इनमें से किन्हीं नौ में गोला लगाना है। पर चाल चलने की शर्तें ये हैं कि:

1. किसी भी कोने या कट से शुरू करके सीधी दिशा में ही चल सकते हो।
2. जिस बिंदु से चाल शुरू होगी उससे तीसरे बिंदु पर गोला बनाकर चाल ख़त्म होगी।
3. चाल की शुरूआत सिर्फ खाली बिंदुओं (बिना गोले के कोनों या कटों) से ही कर सकते हो।
4. भरे हुए या गोले वाले खानों से चाल शुरू नहीं कर सकते पर चाल के बीच में उन्हें गिना जा सकता है।

उदाहरण के लिए दो चाल चलकर बताई गई हैं। हर चाल नं. 1 से शुरू हो रही है और नं. 3 पर ख़त्म हो रही है। देखो और चालों को आगे बढ़ाओ।

(4)

हम तीन लोग एक घर में रहते हैं। तीनों के पास एक-एक ताला-चाबी है। हरेक चाहता है कि जब भी वह कहीं जाए-आए तो अपना ताला-चाबी ही इस्तेमाल करे। क्या यह हो सकता है, कैसे?

(5)

यहां दी गई आकृति को मोड़कर एक घन बनाया जा सकता है। तुम बता सकते हो कि जो घन बनेगा वो नीचे दिए तीनों घन में से किसके जैसा होगा?

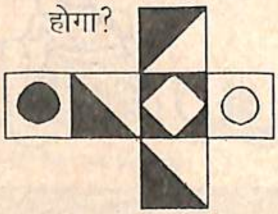

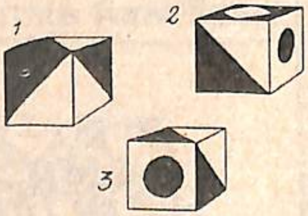

(6)

समुद्र में एक जहाज़ खड़ा है। समुद्र में उतरने-चढ़ने के लिए जहाज़ में बारह सीढ़ियों वाली एक रस्सी लगी है। हरेक सीढ़ी एक फुट के अंतर पर है। सबसे नीचे की चार सीढ़ियां पानी में डूबी हैं। अचानक समुद्र में ज्वार आया। समुद्र का पानी चार फुट बढ़ गया। बताओ कितनी और सीढ़ियां पानी में डूब जाएंगी?

वर्ग पहेली–27

■	1	2	3			4	5		■
6	■	7		■	■	8		■	9
10	11	■	12	13	14		■	15	
16		17	■	18		■	19		
	■	20	21	■	■	22		■	
	■	23		■	■	24		■	
25	26		■	27	28	■	29	30	
31		■	32			33	■	34	
	■	35		■	■	36	37	■	
■	38								■

संकेतः बाएं से दाएं

1. महात्मा गांधी के राजनैतिक गुरू (3,2,3)
7. बाल्टी लाने में मिट्टी का ऊंचा ढेर (2)
8. पराजित (2)
10. बड़ी परात (2)
12. एक लाल रंग की रसीली, गोल सब्ज़ी (4)
15. इसका संबंध ऊपर से नीचे के संकेत क्रमांक 9 से है (2)
16. संचय न करने में चुनाव (3)
18. समस्या हो तो इसे निकालो और खेत भी जोत लो! (2)
19. आठवें और दसवें के बीच का (3)
20. असहज में सुंदरता (2)
22. कपोल है पर कल्पना नहीं (2)
23. लाभ (2)
24. प्रसिद्ध (2)
25. जेल का अधिकारी (3)
27. नींद से उठो (2)
29. नाखून गड़ने का निशान (3)
31. जो टिक्-टिक् करके चलती है पर अपनी जगह से हिलती नहीं (2)
32. सताना या दुखी करना (4)
34. एक ...... दो .... तीन .... ? (2)
35. यह घोड़े के पैर में लगती है (2)
36. जीवन यापन में नूतन (2)
38. संसार में प्रसिद्धी पाना (2,1,2,3)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. रीति (2)
3. बला टलने की गड़बड़ी में माथा (3)
4. दुहाई, रक्षा के लिए पुकार (3)
5. सच्चा और ईमानदार (2)
6. 'अधजल गगरी छलकत जाए' का समानार्थी मुहावरा (2,2,2,2)
9. बहुत परेशान करने को मुहावरे में कहो (2,1,2,3)
11. गीत को गति मिल जाना (2)
13. औसतन 30 दिन की समयावधि (2)
14. .... मल, हिलता हुआ (2)
15. नदी में यातायात का साधन (2)
17. नवा रस की उलटफेर में सुंघनी (4)
19. एक मछली (4)
21. थोड़ा भी, बुढ़ापा भी (2)
22. गीत (2)
26. खूब ...... मर्दानी वो तो झांसीवाली रानी थी (2)
27. धोखा भी और झरोखा भी (2)
28. अहीरन (2)
30. बड़ा टोकरा भी, पिंजरा भी (2)
32. कलम का बहुवचन (3)
33. सिक्खों के प्रसिद्ध धर्म-गुरू (3)
35. काले रंग का, बड़ा, फनवाला सांप (2)
37. माया में है रात (2)

(शरद कुमार डडसेना, लोरमी, बिलासपुर, म. प्र. द्वारा भेजी वर्ग पहेली पर आधारित)

● सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन-माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-27 का हल अक्टूबर अंक में देखें।

कुर्सी मेज बनाओ

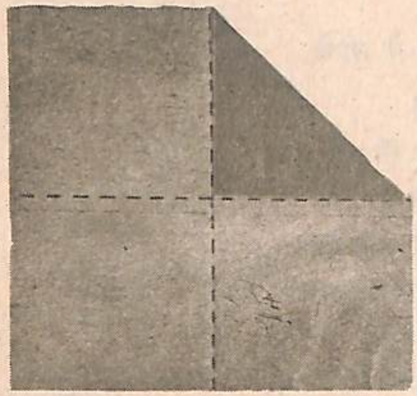

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़कर निशान बना लो। अब चित्र में दिखाए तरीक़े से मोड़ना शुरू करो।

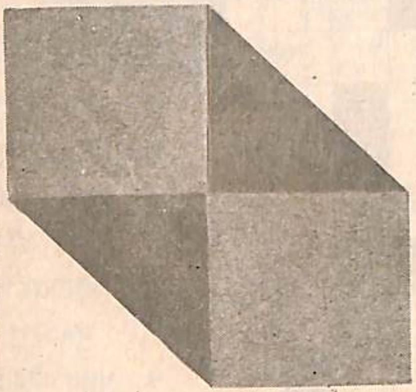

2. दूसरा सिरा भी मोड़ो, इस तरह।

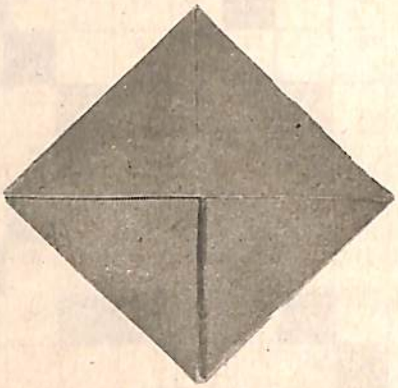

3. तीसरे और चौथे सिरे को भी बीच में मिलाओ। अब तुम्हारे पास फिर एक वर्गाकार आकृति है।

4. इस वर्गाकार आकृति को पलट लो। एक बार फिर चारों सिरे मोड़कर बीच में मिलाओ।

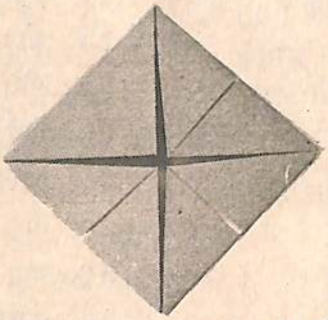

5. इस तरह। इस आकृति को भी पलट लो।

6. अब फिर एक बार, चारों सिरों को उसी तरह मोड़कर बीच में लाओ।

7. ऐसी आकृति मिलेगी। इस आकृति को पलट लो।

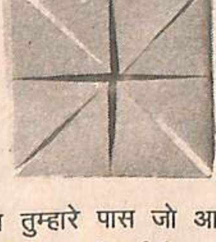

8. अब तुम्हारे पास जो आकृति है, उसमें एक बड़े वर्ग में 4 छोटे वर्ग हैं।

9. चित्र में दिखाए तरीक़े से एक वर्ग खोलो और उसे चपटा कर लो।

10. अब बाकी सभी वर्गों को भी इसी तरह खोलकर चपटा कर लो। तीन वर्गों को खोलने के बाद जो आकृति मिलेगी, वह यहां चित्र में दिखाई गई है।

11. जब चारों वर्ग खुल जाएं तो उनमें से निकले तीन सिरों को पीछे की तरफ मोड़कर मोड़ पक्के कर लो। बचे हुए एक सिरे को आगे की तरफ मोड़कर मोड़ पक्का कर दो। अब अंदर की तरफ मोड़े सिरों को इतना खोलो कि कुर्सीनुमा रचना बन जाए। चित्र देखो।

12 मेज बनाने के लिए एक वर्गाकार काग़ज़ लो। इस पर चित्र एक से तीन तक की क्रिया करो। अब तुम्हें जो आकृति मिलेगी, उसके चारों कोनों को मोड़कर बीच तक लाओ। यही क्रिया एक बार फिर दोहराओ। मोड़ों को पक्का कर लो। अब सबसे आख़िर में मोड़े सिरों को इस तरह खोलो कि एक मेजनुमा रचना बन जाए।

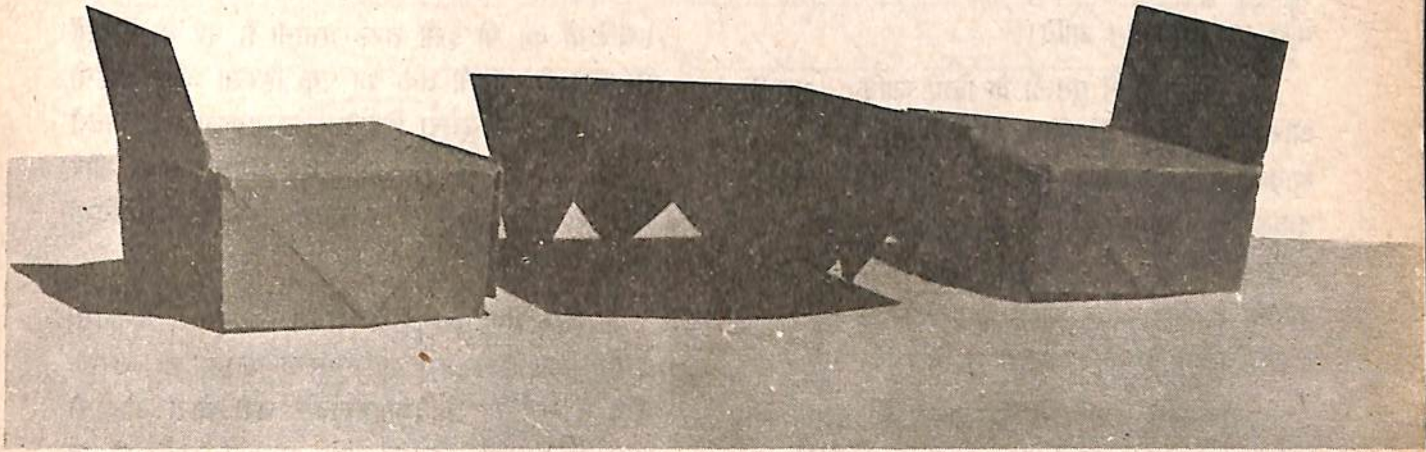

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल- 462016

मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-1/ 208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल- 462016

संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य
ई-1/208 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल- 462016

उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : रेक्स डी रोज़ारियो
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी
भोपाल- 462016

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई, 1993

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

॥ तुम भी बनाओ ॥

अपनी नाटक मंडली

इस बार हम डोरीवाली एक और पुतली लेकर आए हैं। इस पुतली को चपटी या गोल-मटोल, दोनों तरह से बनाया जा सकता है। हम यहां गोल-मटोल पुतली बनाना बता रहे हैं।

पहले ज़रूरी चीज़ें जुगाड़ो- डोरी, रंग, ब्रुश, कपड़े के टुकड़े, चिंदिया या रूई, कैंची, गोंद, पेंसिल, सुई धागा, बटन, गाढ़े रंग का ऊन, गत्ता, चाक या स्केच पेन आदि।

यहां चित्रों में पुतली के लिए जाकिट, आस्तीन और सिर बनाने के लिए आकृतियां दी गई हैं। इन आकृतियों को स्केच पेन या चाक से कपड़े के टुकड़ों पर बनाकर काट लो। चित्रों में दोहरी लाइन दिखाई गई है। बाहर वाली लाइन पर से कपड़ा काटना है और अंदर वाली लाइन पर से सिलना है। लंहगा बनाने के लिए अलग से चित्र दिए गए हैं।

शुरुआत लंहगे से ही करते हैं। इसके लिए एक आयताकार कपड़े का टुकड़ा लो **(चित्र-1)**। इस टुकड़े का लंबाई में किसी एक तरफ से थोड़ा-सा हिस्सा दोहरा कर लो। इस पर सुई-धागे से सादी सिलाई लगा दो। सिलाई के बाद एक सिरे से कपड़े को पकड़कर सिलाई वाले धागे को खींचने से कपड़े पर चुन्नटें पड़ने लगेंगी। इस तरह से कुछ चुन्नटें डालकर कपड़े को बीच से दोहरा कर लो और बाजू से सिलाई कर दो। ऊपर की तरफ पट्टी के छोरों को भी आपस में सिल दो। लंहगे का घेर बन गया। इसे उलट दो ताकि सिलाई वाला हिस्सा अंदर चला जाए। अब नीचे के खुले सिरे से इसमें रूई या चिंदियां ठूंस-ठूंसकर भर दो। लंहगा फूलकर गोल हो जाएगा। लंहगे के नीचे की गोलाई का एक कपड़ा काटो और इस पर लहंगे को खड़ा रखकर चारों ओर से सिल दो **(चित्र-2)**।

लंहगे के बाद जाकिट की बारी। कपड़े के टुकड़े पर कटी इसकी आकृति **(चित्र-3)** को बीच में बनी मोटी लकीर पर से मोड़कर दोहरा कर लो। गर्दन वाली जगह को छोड़कर बाक़ी तीन तरफ से सिल लो। सिले हुए जाकिट को उलट लो, ताकि सिलाई अंदर चली जाए। गर्दन वाली खुली जगह से इसमें चिंदियां या रूई भर दो। पूरी भर जाने पर गर्दन को भी सिलकर बंद कर दो।

हाथ, यानी जाकिट की आस्तीन और हथेलियों को भी इसी तरह बनाना है पर दो हिस्सों में। कंधे से कोहनी तक का एक हिस्सा और कोहनी से हथेली तक दूसरा हिस्सा। इन टुकड़ों को काटते समय कट की गोलाई आदि का ध्यान रखना और सिलकर पलट लेना। फिर इनमें भी रूई या चिंदियां भरना **(चित्र-4)**।

सिर हम पुराने परंपरागत तरीक़े से बनाएंगे। इसके लिए हल्के रंग का एकरंगा कपड़ा लो। उसके बीच में रूई या चिंदियां रखकर उसे चारों ओर से बीच में इकट्ठा करके बांध लो या सुई-धागे से कसकर सिल दो। सिलने के बाद नीचे लटकते इकट्ठे हुए कपड़े को काटकर बराबर कर दो। यह हिस्सा पुतली का गला होगा। अब सिर पर बाल, नाक-मुंह आदि काढ़ लो। अगर कढ़ाई पसंद नहीं है तो रंग से बना सकते हो। आंखें बनाने के लिए बटन या मोती टांक लो **(चित्र-5)**।

अब इन हिस्सों को आपस में जोड़ना है। इसके लिए कपड़े से छोटे-छोटे 3 से.मी.× 4 से.मी. के आयताकार टुकड़े काट लो। लगभग 18-20 टुकड़े लगेंगे। पुतली के सारे अंगों को पहले अपनी-अपनी जगह पर जमा लो। फिर कोई भी दो अंगों, जैसे गर्दन और जाकिट (धड़) के बीच 1-2 मि.मी. की जगह छोड़कर उसे आयताकार टुकड़ों से जोड़ दो। जोड़ने के लिए किसी टुकड़े के एक सिरे को गले वाले हिस्से पर और उसी टुकड़े के दूसरे सिरे को (धड़) जाकिट पर सिल लो। इसी

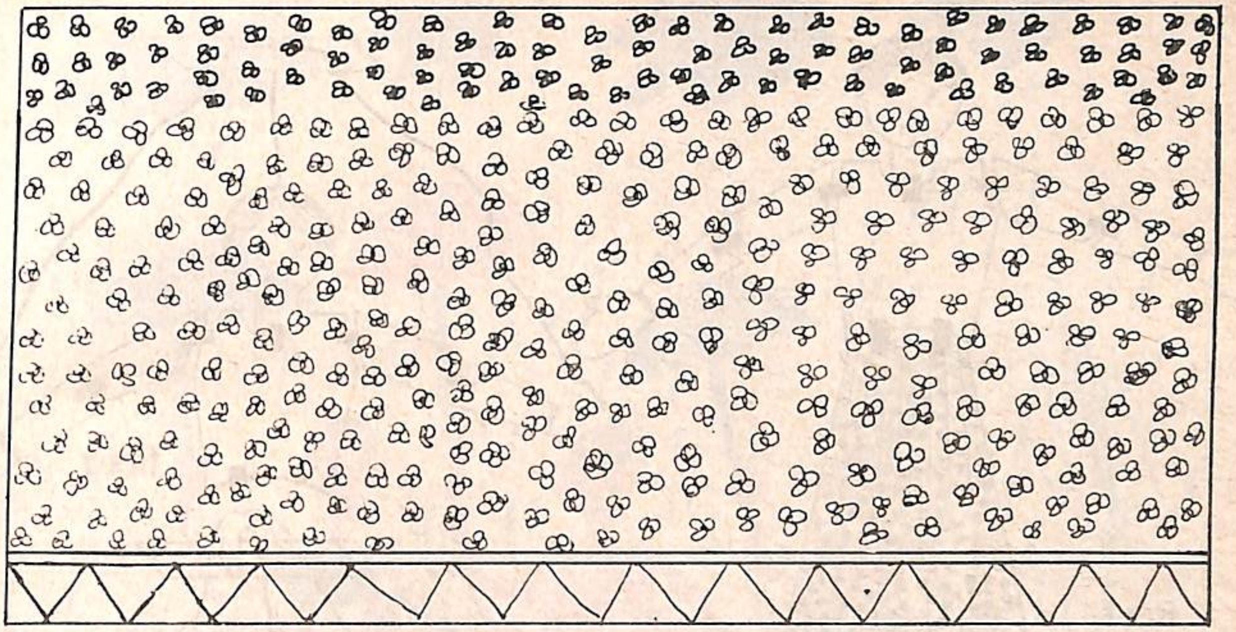

चित्र-1

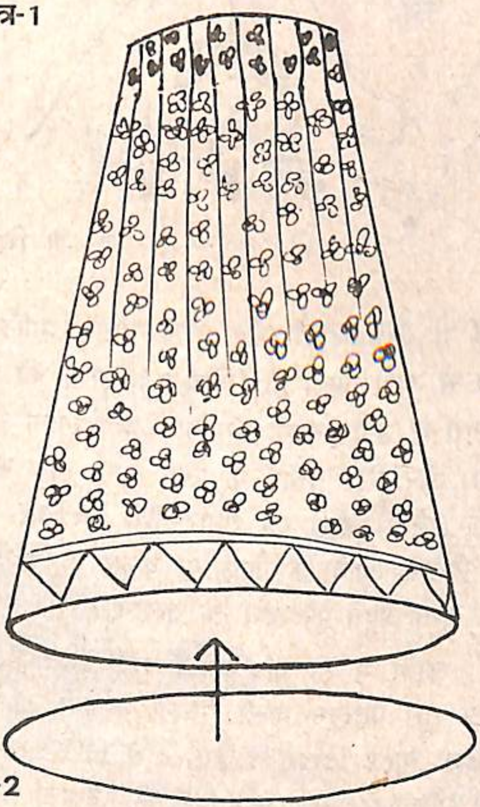

चित्र-2

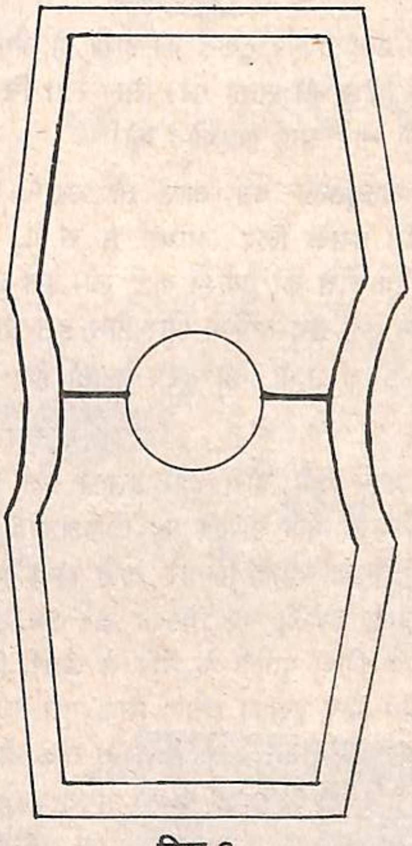

चित्र-3

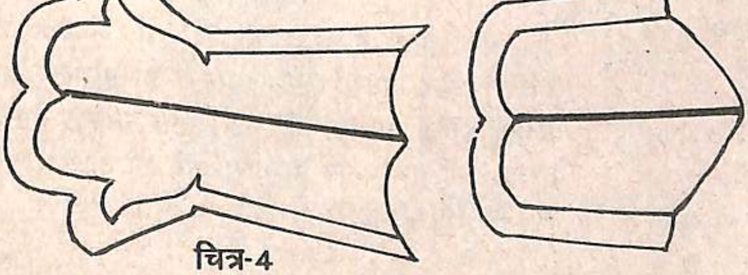

चित्र-4

चित्र-5

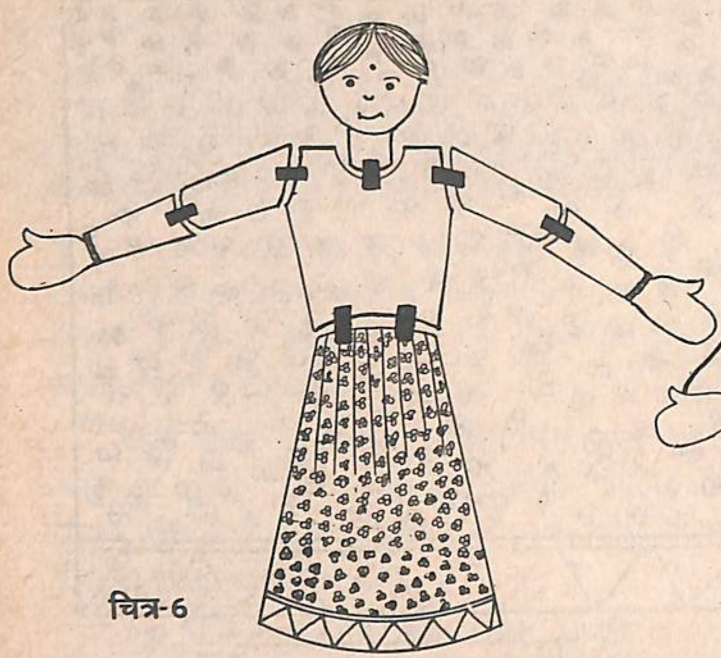

चित्र-6

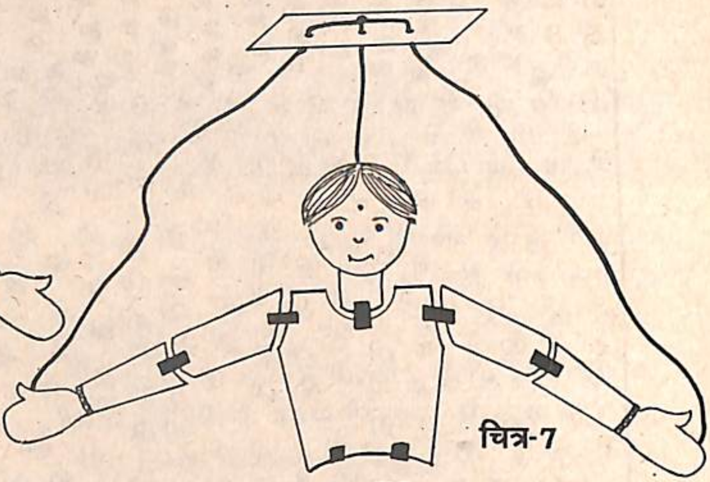

चित्र-7

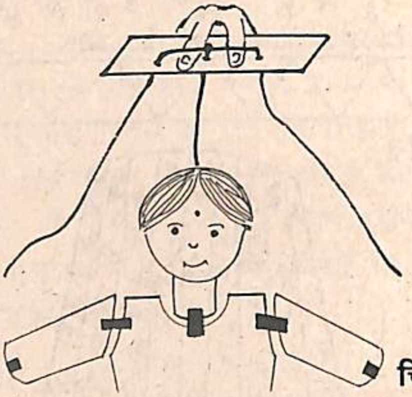

चित्र-8

तरह से एक आयताकार टुकड़े को इन्हीं दो अंगों के दूसरी तरफ (पीछे की सतह पर) सिल लो। **चित्र-6** देखो। ऐसे ही सारे अंगों को जोड़ लो।

जब कठपुतली बन जाए तो उसमें डोरी लगानी होगी। इसके लिए लगभग 8 से.मी. लंबा और चौड़ा एक गत्ते का टुकड़ा काट लो। इस टुकड़े के बीचों-बीच एक छेद बनाओ और फिर इस छेद के दोनों बाजू 3-3 से.मी. की दूरी पर दो छेद और बनाओ।

अब एक लंबी डोरी लो। इसका एक सिरा पुतली की किसी एक हथेली पर चिपकाओ। दूसरे सिरे को गत्ते के दोनों किनारे वाले छेदों में से पिरोकर दूसरी हथेली पर चिपका दो। एक दूसरी डोरी का एक सिरा पुतली के सिर से ऊपरी हिस्से में चिपकाओ। फिर इसका दूसरा सिरा गत्ते के बीच वाले छेद में से पिरोकर लंबी डोरी के ठीक बीच में बांध दो। इस छोटी डोरी को बांधते समय यह ध्यान रखना कि उसकी लंबाई इतनी हो कि पुतली का शरीर न तो बहुत ढीला रहे न ही बहुत खिंचा हुआ (**चित्र-7**)।

बन गई पुतली। इसे नचाने के लिए अपने हाथ के अंगूठे और दोनों छोटी उंगलियां गत्ते के नीचे और तर्जनी और बीच की उंगली गत्ते से ऊपर इस तरह रखो कि तर्जनी और बीच की उंगली के बीच से और अंगूठे और दोनों छोटी उंगलियों के बीच से डोरी जाती हो (**चित्र-8**)। हाथों को चलाने के गत्ते के ऊपर वाली उंगलियों को चलाना सीखना होगा। और सिर नचाने के लिए दूसरे हाथ से बीच वाली (छोटी) डोरी को ऊपर-नीचे हिलाओ। पुतली को बिठाने आदि के लिए या कमर से झुकाने के लिए तुम्हें अपने पूरे हाथ को चलाना होगा।

लंहगे में तो पांव अंदर छुपे रहते हैं। परंतु अगर तुम पतलून वाली पुतली बनाओ तो उसके पांव तो बाहर दिखने चाहिए। कैसे दिखाओगे पांव? ख़ुद सोचकर बनाना और हमें भी लिखना कि कैसे बनाया।

एक बात है, यह हमारी इस श्रृंखला की आख़िरी और सबसे कठिन पुतली है। इसलिए इसे चलाना इतना आसान भी नहीं। कुछ ज़्यादा मेहनत करनी होगी तुम्हें। जब अभ्यास कर लो और चलाना आ जाए तो हमें लिखना कि कैसा लगी यह?

□□

ऋषिका साही, सात वर्ष, भोपाल, म.प्र.

कीर्ति चौहान, चौथी, टिमरनी, म.प्र.

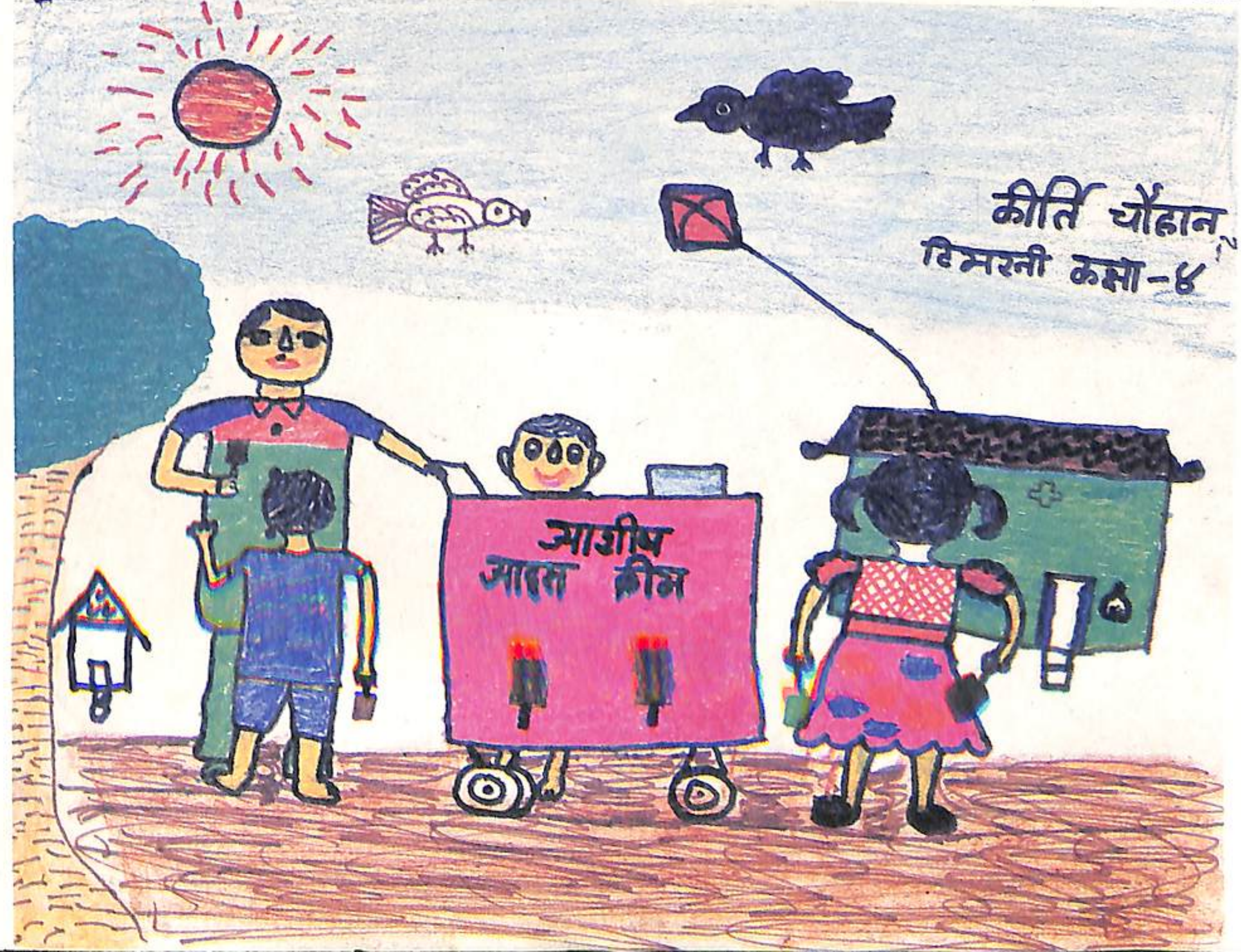

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/ 431/93

विवेक तिवारी, भोपाल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना